TIRUMALA TIRUPATI DEVASTHANAMS
ARTIST COPY
सप्तगिरि
अक्तूबर १९७९
JAGADISH
तिरुमल - तिरुपति देवस्थान की मास - पत्रिका

# तिरुमल में राष्ट्रपति

देवस्थान के द्वारा शेषवस्त्रों से सन्मानित राष्ट्रपति तथा आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री के साथ देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी और अन्य प्रमुख लोग।

देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी. वी. आर. के. प्रसाद के द्वारा भेंट दिये गये आल्बम् को देखते हुए माननीय राष्ट्रपति।

देवस्थान के द्वारा रु. ८५ लाख के खर्च से बनाये जानेवले क्यू काम्पलेक्स को परिशीलन करते हुए राष्ट्रपति महोदय।
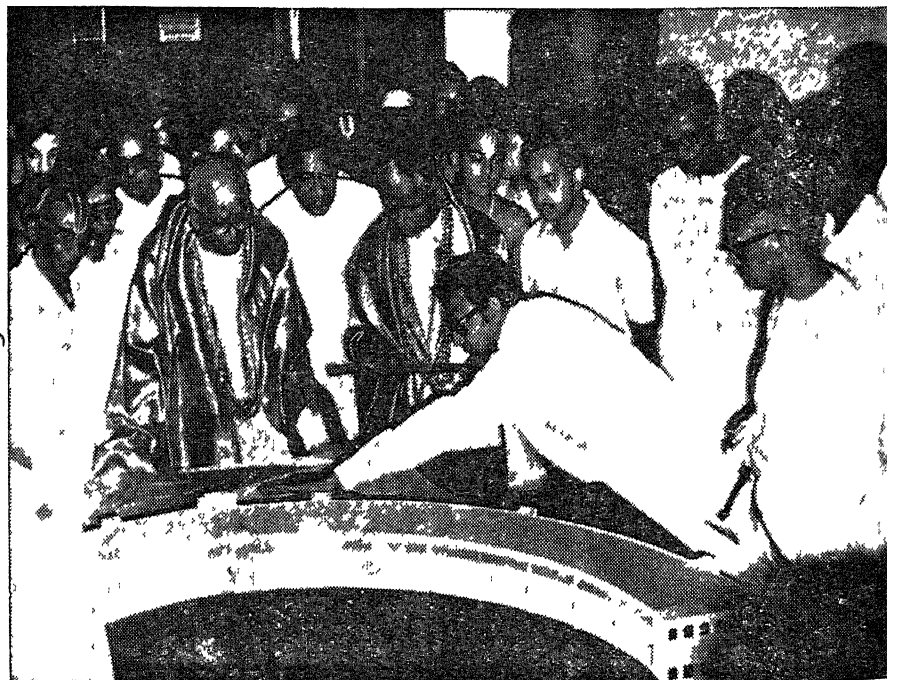
हरि हरि हरि सुमरो सब कोई, हरि सुमरित सब सुख होई ।
हरि समान द्वितीय नहि कोई, हरि चरननि राखो चित गोई ।
श्रुति स्मृति सब देखो जोई, हरि सुमारि होह सो होई ।
हरि हरि हरि सुमरो सब कोई, बिनु हरि सुमरिन मुक्ति न होई ।

—सूरसागर, पद ३४४.

# श्रीवेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मन्दिर, तिरुमल.

१-३-७९ से

## दैनिक पूजा एवं दर्शन का कार्यक्रम

### शनि, रवि, सोम तथा मंगलवार

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्रात | 3-00 से | 3-30 तक | सुप्रभात |
| ,, | 3-30 ,, | 3-45 ,, | शुद्धि |
| ,, | 3-45 ,, | 4-30 ,, | तोमालसेवा |
| ,, | 4-30 ,, | 4-45 ,, | कोलुवु तथा पचागश्रवण |
| ,, | 4-45 ,, | 5-30 ,, | पहली अर्चना |
| | 5-30 ,, | 6-00 ,, | पहलीघटी तथा सात्तुमोरै |
| ,, | 6-00 ,, | 12-00 ,, | सर्वदर्शन |
| दोपहर | 12-00 ,, | -00 ,, | दूसरी अर्चना |
| ,, | 1-00 ,, | 8-00 ,, | सर्वदर्शन |
| रात | 8-00 ,, | 9-00 ,, | शुद्धि तथा रात का कैंकय |
| ,, | 9-00 ,, | 12-00 ,, .. | सर्वदर्शन |
| ,, | 12-00 ,, | 12-30 ,, | शुद्धि |
| ,, | | 12-30 | एकान्त सेवा |

### बुधवार (सहस्र कलशाभिषेक)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रात | 3-00 से | 3-30 तक | सुप्रभात |
| ,, | 3-30 ,, | 3-45 ,, | शुद्धि |
| ,, | 3-45 ,, | 4-30 ,, | तोमाल सेवा |
| ,, | 4-30 ,, | 4-45 ,, | कोलुवु तथा पचाग श्रवण |
| ,, | 4-45 ,, | 5-30 ,, | पहली अर्चना |
| ,, | 5-30 ,, | 6-00 ,, | पहलीघटी तथा सात्तुमोरै |
| ,, | 6-00 ,, | 8-00 ,, | सहस्र कलशाभिषेक |
| ,, | 8-00 रात | 8-00 ,, | सर्वदर्शन |
| रात | 8-00 ,, | 9-00 ,, | शुद्धि |
| ,, | 9-00 ,, | 12-00 ,, | सर्वदर्शन |
| ,, | 12-00 ,, | 12-30 ,, | शुद्धि |
| ,, | ,, | 12-30 ,, | एकात सेवा |

### गुरुवार (तिरुप्पावडा)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रातः | 3-00 से | 3-30 तक | सुप्रभात |
| ,, | 3-30 ,, | 3-45 ,, | शुद्धि |
| प्रात | -45 से | 4-30 तक | तोमाल सेवा |
| | -30 ,, | 4-45 ,, | कोलुवु, तथा पचागश्रवण |
| ,, | 4-45 ,, | 5-30 ,, | पहली अर्चना |
| ,, | 5-30 ,, | 6-00 ,, | पहली घटी, बाली तथा सात्तुमोरै |
| | 6-00 ,, | 8-00 ,, | सडलिपु, दूसरी अर्चना तिरुप्पावडा, अलकरण घटी इत्यादि |
| ,, | 8-00 रात | 8-00 ,, | सर्वदर्शन |
| | 00 ,, | 10-00 ,, | शुद्धि इत्यादि पूलगि समर्पण रात का कैंकर्य, घटी |
| ,, | 10-00 ,, | 12-00 ,, | पूलगि सेवा (अर्जित) |
| ,, | 12-00 ,, | 12-30 ,, | शुद्धि |
| ,, | ,, | 12-30 ,, | एकात सेवा |

### शुक्रवार (अभिषेक)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रात | 3-00 से | 3-30 तक | सुप्रभात |
| ,, | 3-30 ,, | 5-00 ,, | ... सडलिपु का नित्य कैंकर्य (एकात) |
| ,, | 5-00 ,, | 7-00 ,, | अभिषेक (अर्जित) |
| ,, | 7-00 ,, | 8-30 ,, | समर्पण |
| ,, | 8-30 ,, | 9-30 ,, | तोमाल सेवा अर्चना, घंटी बालि तथा सात्तुमोरै |
| ,, | 9-30 ,, | 10-00 ,, | दूसरी घटी, सात्तुमोरै |
| ,, | 10-00 रात | 8-00 ,, | सर्वदर्शन |
| रात | 8-00 ,, | 9-00 ,, | शुद्धि, रात का कैंकय |
| ,, | 9-00 ,, | 12-00 ,, | सर्वदर्शन |
| ,, | 12-00 ,, | 12-30 ,, | शुद्धि |
| ,, | ,, | 12-30 ,, | एकात सेवा |

सूचना १ उक्त कार्यक्रम किसी त्योहार तथा विशेष उत्सव दिनो के अवसर पर समयानुकूल बदल दिया जायगा। २. सुप्रभात दर्शन केलिए सिर्फ रु २५/- टिकेटवालो को ही अनुमति मिलेगी। ३. रु २५/- के टिकेट तिरुमल मे तथा आन्ध्रा बैंक के सभी शाखाओ में मिलेगी। ४. सेवानंतर टिकेट को रद्द कर दिया गया। ५ प्रत्येक दर्शन के टिकेटवालो को पहले के जैसे ध्वजस्थभ के पास से नही, बल्कि महाद्वार से क्यू मे मिलाया जायगा। ६. रु २००/- के अमत्रणोत्सव टिकेट पर दो ही व्यक्तियो को भेजा जायगा। ७. अर्चना, तोमाल सेवा, एकातसेवा में दर्शनानंतर टिकेट या रु २५/- का टिकेट नही बेचा जायेगा।

—पेष्कार, श्री बालाजी का मदिर, तिरुमल.

# सप्तगिरि
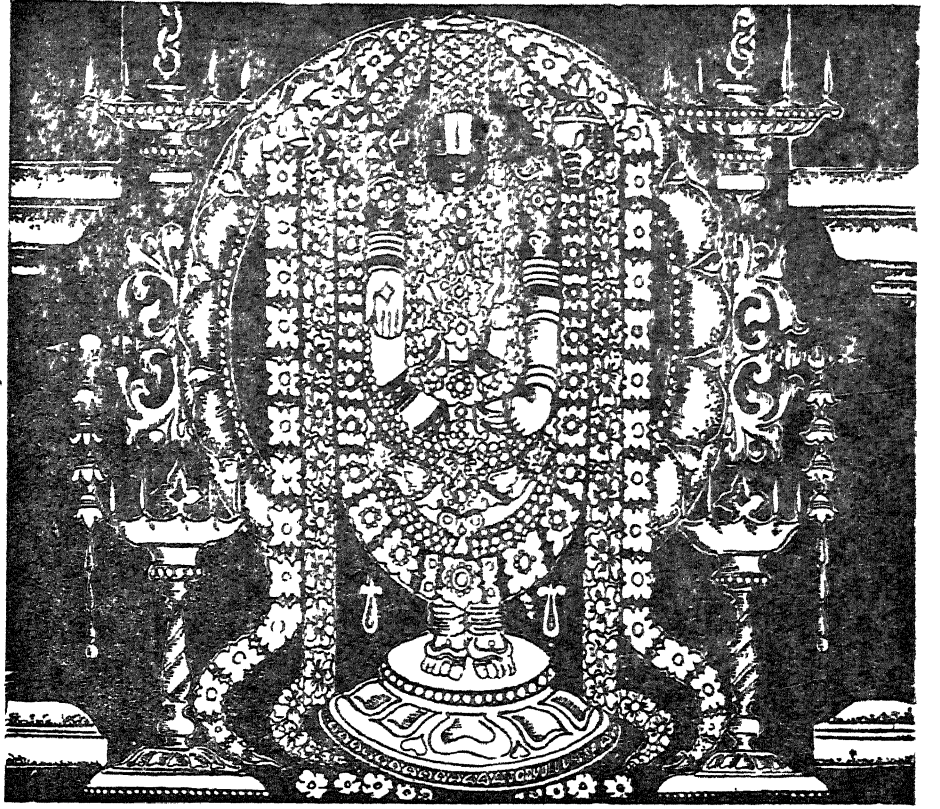
अक्तूबर १९७९ वर्ष १० अंक ५

एक प्रति .... रु. ०—५०
वार्षिक चंदा .... रु. ६—००

गौरव सपादक
श्री पी. वी आर. के. प्रसाद
आइ. ए यस्,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति ति. दे. तिरुपति
दूरवाणी २३२२

सपादक, प्रकाशक
के. सुब्बाराव, एम. ए,
तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति
दूरवाणी २२५४.

मुद्रक
एम्. विजयकुमाररेड्डी,
मेनेजर, टी. टी. डी. प्रेस्, तिरुपति
दूरवाणी २३४०.

अन्य विवरण के लिये
EDITOR
'Sapthagiri'
T T D Press Compound,
TIRUPATI-517501

विद्याविहीनः पशुः—यह उक्ति प्रसिद्ध है। विद्या विहीन व्यक्ति पशु समान ही होता है। विद्या ही वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्यता का विकास होता है। विद्या ही मानवी शील का एक श्रृंगार है। इतना ही नहीं, विद्या मनुष्य केलिए कल्पवृक्ष के समान है। उसके द्वारा मनुष्य के जीवन का सर्वांगीण विकास होता है— किं किं साधयति कल्पलतेव विद्यां। स्वामी विवेकानंद के अनुसार – "विद्या विविधजानकारियों का ढेर नहीं, बल्कि मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है, उसे प्रत्यक्ष करना ही विद्या का कार्य है। इस प्रकार मानव में विवेक सच्चरित्र, विनय, स्वावलंबन व अहंकार दूरता आदि सद्गुणों का विकास केवल विद्या द्वारा ही प्राप्त होता है। अगर विद्या ही न होती, वह विवेक हीन व मूर्ख होकर अज्ञान के कारण निरुपयोग बनता है। ऐसे व्यक्ति समाज के लिए अहितकर भी है। कहने का मतलब यह है कि सामाजिक कल्याण के लिए विद्या का होना अत्यंत आवश्यक है। प्राचीन काल में गुरुकुल पद्धति के द्वारा विद्या का बोधन किया जा रहा है। ये ही वास्तव में बच्चों के अज्ञान को दूर करनेवाले तथा मानसिक व शारीरक विकास के केंद्र है, जहाँ वे अच्छे गुणों को सीखकर, अपने माता-पिता, गुरु एवं समाज के लिए उपयोगी बनते हैं।

यह तो खुशी की बात है कि हाल ही में तिरुपति में स्थित श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय ने अतिवैभव से रजतोत्सव मनाया था। श्री बालाजी के करुणा कटाक्ष से, देवस्थान के द्वारा जमीन, भवन व आर्थिक सहायता देने पर, इस संस्था का आविर्भाव हुआ। इस प्रकार इस संस्था से देवस्थान का संबंध पहले से ही रहा। इस विद्यालय के पितामह स्व आंध्रकेसरी टंगुटूरि प्रकाशं पंतुलुजी, तब के मुख्यमंत्री, इस रायलसीम प्रांत की आवश्यकता को जानकर इस संस्था को खोलने का कार्यभार उठा लिया। अब के राष्ट्रपति डा. नीलसंजीवरेड्डीजी, जो उस समय के उपमुख्यमंत्री थे, इस संस्था के संस्थापक रहे।

इस संस्था से कई विद्वान, पण्डित, निपुण व शास्त्रज्ञों का सम्बन्ध रहा है। और कई ऐसे प्रमुख विद्वानों ने इस संस्था की प्रगति के लिए अनवरत श्रम किये। इस संस्था के लिए डा. गोविंद राजुलु नायुडु, डा वामनराव, डा जगन्नाथ रेड्डी, डा. सच्चिदानंद मूर्तिजी बारी से उपकुलपति रहे। अब के उपकुलपति डा. शान्तप्पाजी है। तथा अपनी कार्यदक्षता व चतुरता के कारण इस संस्थाको प्रशंसनीय बना दिया।

देवस्थान का आशय यह है कि इस संस्था को आध्यात्मिक, चारित्रिक, विज्ञान, साहित्यक, तथा ललितकलाओं के क्षेत्रों में प्रसिद्ध बनाना है। शोध कार्य व वैज्ञानिक विभाग का कार्य भी शीघ्रतिशीघ्र प्रगतिशील हो रहा है। इस संस्था के लिए देवस्थान ने रु ३० लाख का दान दिया, जिस पर आनेवाली सूद से पुरातत्व शास्त्र, शिलालेख विद्या तथा अन्नमाचार्यजी का पीठ आदि विभागों में शोध कार्य आदि कराने को कहा गया है।

अंत में यह कह सकते है कि ऐसी संस्था में पढकर विद्यार्थी निश्चय ही आदर्श बनेगा। उसके लिए भी उज्ज्वल भविष्य होगा तथा वह अपनी जीवन सुख और शांति से बितायेगा। इसलिए हमारे राष्ट्रपति के भाषण मे बतायेनुसार अध्यापक और विद्यार्थी का सम्बन्ध अच्छा हो। अध्यापकों को विद्यार्थी के प्रति उदार भाव से रहना चाहिए और उनके उन्नति के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। विद्यार्थी को भी अपने गुरु के प्रति सद्भाव रखना चाहिए। एकाग्र चित्त होकर विद्या ग्रहण करना चाहिए तथा तभी वह आदर्श विद्यार्थी बनकर देश का सच्चा नागरिक बनेगा।

ऐसी समाजहितैषी संस्था की निरंतर प्रगति के लिए सभी लोगों का भी मदद आवश्यक है। उस लक्ष्य तक पहुँचाने केलिए बालाजी से सविनय प्रार्थना करते है "**सबको सन्मति दे भगवान।**"

# अवतार - प्रयोजन

ति. अ. संपत्कुमाराचार्य, श्रीकाञ्ची

भगवद्गीता का यह पद्य प्रसिद्ध है —

परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगेयुगे ।।

इस मे भगवदवतार के ये तीन प्रयोजन बताये गये हैं — साधुओं का रक्षण, दुष्टों का विनाश और धर्म का स्थापन। वेदादि शास्त्र पुकारते हैं कि भगवान अपने सङ्कल्प (इच्छा) मात्र से जगत की सृष्टि रक्षा व संहार करते हैं। क्या ऐसे सत्यसङ्कल्प व असीम शक्ति वे अवतार लिये बिना ये तीन कार्य नही कर सकते? शास्त्र में विश्वास रखने वालों को अवश्य मानना ही पडेगा कि भगवान ये सभी कार्य अवतार के बिना भी कर सकते और कर भी रहे हैं। वे प्रतिदिन, प्रतिक्षण, कितने भक्तों की रक्षा, दुष्टों की शिक्षा और धर्म की रक्षा के कार्य कर रहे हैं। क्या ये सभी अवतार लेकर ही किये जाते हैं? नही, नहीं। फिर इस गीतापद्य का क्या तात्पर्य है?

ब्रह्म सूत्र के पहले अध्याय के पहले पाद में एक 'अन्तरधिकरण' आता है, जिसमें प्रसिद्ध 'कप्यास' श्रुति का विवेचन किया जाता है। वहां पर श्री भाष्यकार स्वामीजी प्रसक्त गीता-पद्य को उदाहृत करते हुए लिखते है कि — "साधवो हि उपासका:; तत्परित्राणमेवोद्देश्यम्। आनुषङ्गिकस्तु दुष्कृतां विनाश:, सङ्कल्पमात्रेणपि तदुपपत्ते:।" इसमे प्रतीत होता है कि साधु कहलानेवाले परम-भक्तों की रक्षा करने के लिए ही भगवान अवतार लेते हैं; दुष्टविनाश तो मुख्यप्रयोजन नहीं है, चूँकि अवतार लिए बिना भी वह किया जा सकता है। आश्चर्य की बात है कि यहां पर धर्मस्थापन का विवरण चर्चा आदि कुछ नहीं किया गया। फलतया साधु परित्राण रूप एक ही प्रयोजन बताया गया।

उन्हीके गीताभष्य के तो ये वचन हैं— "साधव: - उक्तलक्षणधर्मशीला: वैष्णवाग्रेसरा: मत्समाश्रयणे प्रवृत्ता: मन्नामकर्मस्वरूपाणां वाङ्मनसागोचरतया मद्दर्शनेन विना स्वात्मधारण-पोषणादिकमलभमाना: क्षणमात्रकालं कल्प-सहस्रं मन्वाना: प्रसिथिलसर्वगात्रा भवेयुरिति मत्स्वरूप चेष्टितावलोकनालापादिदानेन तेषां परित्राणाय, तद्विपरीतानां विनाशाय च, क्षीणस्य वैदिकस्य धर्मस्य मदाराधनरूपस्य आराध्य-स्वरूपप्रदर्शनेन स्थापनाय च, देवमनुष्यादि-रूपेण युगेयुगे संभवामि।" इससे स्पष्ट बताया जाता है कि साधुपरित्राण व धर्मस्थापन ने दोनों अवतार लिए बिना, माने सङ्कल्प-मात्र से सिद्ध नहीं, होते। परंतु दुष्ट-विनाशन के बार में कोई स्पष्ट विवरण नहीं किया गया। जो भक्त जन भगवान से सीमातीत प्रेम करते हुए, उसके निमित्त, तत्काल भगवान से मिलना चाहते है, परंतु उनको अवाङ्मनसगोचर समझ कर निराश हो अथाह विश्लेष दु:ख भोगने लगते हैं, उनसे मिलने के लिए भगवान को अवतार लेना ही पडता है। एवं भगवान का आरा-धन किये बिना कोई भी भक्त चित्त की शांति एवं सद्गति पा नहीं सकता, अत: सबको उनका आराधन करना ही है। परंतु भगवान का स्वरूप अतींद्रिय बताया गया है। फिर उसका ध्यान आराधन आदि कैसे किये जा सकते है? अत: भगवान को अवतार लेकर ही भक्त के सामने प्रकट हो उसकी सेवा सका-रना पडता है, अर्थात् भगवदाराधन रूप धर्म का स्थापन करना पडता है। इस प्रकार ये दो प्रयोजन अवतार के बिना सिद्ध नही होंगे।

श्रीवचन भूषण नामक (द्राविडी) ग्रंथ में श्री लोकाचार्य स्वामीजी लिखते हैं कि "नञ्जीयर नामक श्री वेदांति स्वामीजी के कथनानुसार भगवान ने अवतार लेकर जो जो कार्य किए, उन सब का एक मात्र कारण भागवतापचार की असहिष्णुता ही हैं।"


## यात्रीगण कृपया ध्यान दें

देवस्थान के अधिकारियों को यह मालुम हुआ कि कुछ धोखेबाज लोग भगवान के प्रसाद के रूप में मंदिर के बाहर नकली लड्डू बेच रहे हैं। वे वास्तव में भगवान के प्रसाद नहीं है। भगवान को भोग लगाये हुए प्रसाद मंदिर के अन्दर और मन्दिर के सामने स्थित आन्ध्रा बैंक के काउन्टर में ही प्राप्त होते हैं। यात्रीगण कृपया भगवान के असली प्रसाद को मन्दिर और आन्ध्रा बैंक के काउन्टर से ही प्राप्त करे।

# तुम्हीं से

कुमारी तुलसी बाई

जा पायें अन्धकार मे प्रकाश।
चल पड़ें कुमार्गी, सन्मार्ग ।
आशा ज्योत जलाये निरागी ।
पायें मुक्ती पुरूष कर्म निष्ट ।
जानें भक्त स्वरूप उच्च भक्ति।
देखें आलोक दिव्य सुर जगत
तुम्हीं से॥

पायें शोकग्रस्त, जीवन उल्लासमय।
करें ज्ञान विमूढ कर्त्तव्य निज।
जाने साधन पापी सकल पाप
नाश।
सुलझें उलझन सारी सुगम।
हुवें पूरी मंगल कामना अपनी।
अज्ञात हृदय वासी हे। सर्वांतर्यामी
तुम्ही से॥

इसका यह तात्पर्य है कि जब कोई दुष्ट भक्तो के विषय में अपराध करता है; तब भगवान उसके प्रति इतने रुष्ट होते हैं कि स्वय उसके पास जाकर अपने हाथ से उसे मारे विना उनके मन में शाति नही मिलनी। अत: अवतार का प्रयोजन मुख्यतया दुष्टविनाशन ही है। बात तो ठीक ही प्रतीत होती है। पुराणों में हम वाचते हैं कि हिरण्याक्ष, हिरण्य-कशिपु, रावण, कस आदि दुष्टों के विनाशार्थ ही भगवान ने वराह, नरसिंह, श्री राम कृष्णादि अवतार लिए। भगवान भक्त से जितना प्रेम करते हैं, उसके दुश्मन से उतना, अथवा उतने से भी अधिक कोप करते है ओर अत एव स्वयं अपने धाथ से उस पापी का वह करते हैं। संकल्प मात्र से अथवा दूसरे किसीको निमित्त बनाकर उसके द्वारा शत्रु का उद्धार करने पर भगवान का भक्तप्रेम प्रकट नही होगा, और साधारण जनता भी नहीं समझेगी कि भक्त का दुश्मन होने के कारण इस दुष्ट को यह दड मिला।

समझना चाहिए कि पूर्वोक्त गीताभाष्य वचन में भी यह अर्थ गर्भित है। 'तद्विप-रीतानां विनाशाय' का यह अर्थ होता है कि पूर्वोक्त साधुओ के दुश्मनो के विनाशार्थ। अत: हम समझ सकते है कि श्री गीताभाष्य में श्री स्वामीजी महाराज तीनों प्रयोजन को मुख्य लिखा।

यद्यपि भगवान ने गीताजी में अवतार के ये तीन ही प्रयोजन बताये, तथापि हमारे आचार्य और भी कई प्रयोजन बताते हैं। जिनमें से दो तीन का अब विवरण करेंगे, गीताजी का यह एक प्रसिद्ध वचन है कि 'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्' जिसका यह भी एक अर्थ होना है कि भक्त-जन जिस रूप से मेरे दर्शनादि रूप भजन करना चाहते है. मै उसी रूप मे उनके सामने प्रकट होता हू। श्री कृष्ण भगवान ने श्री देवकी जी के गर्भ से प्रकट होते ही उनसे कहा कि, "तुम दोनों ने पूर्वजन्म में बडी तपस्या की और मझसे मेरे सदृश पुत्र माँगा। मेरा सदृश कोई होही नही सकता; अत: मुझे ही तुम्हारे पुत्रतया अवनार लेना पडा।" कहने का भाव यह है कि भगवान अपने भक्तों के अपेक्षानुसार रूप लेकर उनके सामने अवतार लेते है। आचार्यों का कहना है कि यह पद्य अर्चावतार का भी सूचक है; कारण कि 'यथा' शब्द का अर्थ, अर्चा रूप भी हो सकता है। अत. अवतार का यह भी एक प्रयोजन हुआ, जिसको कितने लोग साधुपरित्राण का एक रूपातर भी मानते होंगे।

उक्त 'ये यथा' इत्यादि गीतावाक्य से यह भी सिद्ध होना है कि जैसे भक्त प्रभु से शीघ्र मिलने की चिंता, त्वरा आदि करता, इसी प्रकार भगवान भी ऐसे परमभक्त से शीघ्र मिलने की चिता, त्वरा आदि करते हैं। सर्वव्यापक होने से भगवान सर्वदा सबमे मिलकर रहते ही है; तथापि इस सर्व-मधारण मिलन से उनका सतोष नही होता। एवं वे भक्त की भक्ति बढाकर उसके पाप मिटाकर परमपद पहुचाकर उसका अनुभव कर सकते हैं। परंतु इसमे भी पूरा सतोष नही मिलना। इसके कई कारण होते हैं। किसीको परमपद ले जाने मे भी भगवान कई नियमों का पालन करते है। अतएव गीताजी में गाया गया कि "बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञान-वान मा प्रपद्यते।" कभी कभी भगवान इतने विलंब का सहन करने मे अशक्त हो, तत्काल उनसे मिलने के लिए अवतार लेकर ससार में आते है। कभी कभी भगवान (श्री शठकोपसूरीजैसे) परम भक्तों के, ज्ञान भक्ति विरक्ति आदि की सुगंध से युक्त, इस मानव विग्रह से बहुत प्रेम करके, उससे ही मिलना चाहते है। सहस्र गीति के अत में बताया जाता है कि भगवान श्री शठकोपसूरी को इस मानव विग्रह के साथ ही परमपद ले जाना चाहते और सूरीजी उन्हें बहुत समझा-कर प्रयत्न से यह सकल्प छुडा देते हैं। अस्तु यह दूसरी बात है। अब का विचार इतना है कि भगवान भक्त से इसी ससार में मिलना चाहते और अतएव अवतार लेते हैं। अतएव श्री कूरेश स्वामीजी ने वरद-राजस्तव में गाया —

**सश्लेषे भजता त्वरापरवशः कालेन सशोध्य तान्**
**आनीय स्वदये स्वसगमकृत सोढु विलम्ब बत!**
**अक्षाम्यन् क्षमिणां वरो वरद! सन् अत्रावतीर्णो भवे:**
**किं नाम त्वमसश्रितेषु वितरन् वेषं वृणीषे तु तान्॥ (६६)**

इस का यह तात्पर्य है— हे वरदराज

भगवान्। आप तो क्षमावालों में श्रेष्ठ हैं। तो भी आप अपने से मिलने की त्वरा करने वाले भक्तों को चिरकाल तक परिशुद्ध बनाकर, फिर परमपद पहुंचाकर उनसे मिलने में जो विलंब होगा, उसका सहन करने में अशक्त हो स्वयं इस धरातल अवतीर्ण होने (और उन भक्तों) से मिलते हैं। यह तो ठीक है। अब बेशक यह कार्य करे। परंतु भक्तों के दर्शनार्थ लिए हुए उस विलक्षण अवतार विग्रह को अभक्तों (एवं दुश्मनों) को भी दिखाते हुए उनको भी अपनाना चाहते है, यह क्या बात है? (इसका रहस्य हम समझ नहीं सकते।)

इस पद्य के अंतिम वाक्य से यह अर्थ बनाया जाता है कि भक्तों के लिए स्वीकृत अपने दिव्यमंगल विग्रह को अभक्तों को भी दिखाते हुए भगवान उनको भक्त बनाना चाहते है। श्रीरामकृष्णाद्यावतारों में जितने लोग भगवान के भक्त बने, ये सभी जन्म से भक्त नहीं थे, किंतु बहुत से जन भगवान के दर्शन करने के बाद, उनके रूप गुण आदि से अपहृत चित्त हो उनके भक्त बने। अतः अभक्तों को भी भक्त बनाना—यह भी अवतार का एक प्रयोजन सिद्ध हुआ।

इसी अर्थ को और थोडा आगे बढाकर आचार्य बताते हैं कि सृष्टि, पालन शास्त्रप्रदान इत्यादि संसार सागर में डूबकर भगवत्स्वरूप पहिचानने में अशक्त हो अतएव क्षुद्रसांसारिक विषयानुभवनिमग्न दुःखी मानवों को अपने दिव्यमंगलविग्रह के सुंदर दर्शन दे और कल्याणगुण दिखाकर उनको सन्मार्ग में लाने के उद्देश्य से होते हैं। अर्थात् भगवान अपने अतींद्रिय स्वरूप को सब के दर्शनीय बनाते हुए देव मनुष्यादि रूप से अवतीर्ण हो,

**न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन।**
**नानवाप्तमवाप्तव्य वर्त एव च कर्मणि॥**

## श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर
## नारायणवनम्, [ति. ति. देवस्थान]

## दैनिक-कार्यक्रम

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | सुप्रभात | प्रातः | ६–०० से | प्रातः | ६–३० तक |
| २. | विश्वरूप सर्व दर्शन | ,, | ६–३० ,, | ,, | ८–३० ,, |
| ३. | तोमालसेवा | ,, | ८–३० ,, | ,, | ९–०० ,, |
| ४ | कोलुवु & अर्चना | ,, | ९–०० ,, | ,, | ९–३० ,, |
| ५. | पहली घंटी, सात्तुमोरै | ,, | ९–३० ,, | ,, | १०–०० ,, |
| ६. | सर्वदर्शन | ,, | १०–०० ,, | ,, | ११–३० ,, |
| ७ | दूसरी घंटी अष्टोत्तरम् (एकांत) | ,, | ११–३० , | मध्याह्न | १२–०० ,, |
| ८. | तीर्मानम् | मध्याह्न | १२–०० | | |
| ९. | सर्वदर्शन | शाम | ४–०० से | ,, | ६–०० ,, |
| १०. | तोमाल सेवा & अर्चना रात का कैंकर्य तथा सात्तुमोरै | शाम | ६–०० ,, | ,, | ७–०० ,, |
| ११. | सर्वदर्शन | रात | ७–०० ,, | ,, | ८–४५ ,, |
| १२. | एकांत सेवा | ,, | ८–४५ ,, | ,, | ९–०० |

## अर्जित सेवाओं की दरें

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | अर्चना & अष्टोत्तरम् | रु | ३–०० |
| २. | हारती | रु. | १–०० |
| ३. | नारियल फोडना | रु. | ०–५० |
| ४ | सहस्र नामार्चना | रु. | ५–०० |
| ५ | पूलंगि (गुरुवार) | रु | १–०० |
| ६. | अभिषेकानंतर दर्शन (शुक्रवार) | रु | १–०० |

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति ति देवस्थान, तिरुपति.

इत्यादि गीतोक्त प्रकार तत्तज्जाति के अनुरूप सभी कर्मों को आलस्य छोडकर करते और उनके ही सदृश सुखदुःखों का अनुभव करते, सर्वथाउनमें से एक होते हैं, जिससे वे उन पर प्रेम व विश्वास रख सकते है। अतः विमुख ससारियों को भी भक्त बनाकर परमपद पहुचाना भी अवतार का एक मुख्य प्रयोजन सिद्ध हुआ। हमारे पूर्वाचार्य इस अर्थ की बारबार प्रशंसा करते हैं। जैसे कि पराशर भट्टार्य स्वामीजी श्री रंगराजस्तव के उत्तर शतक में गाया —

> भूयो भूयस्त्वीय हितपरे ऽप्युत्पथानात्मनीन-
> स्त्रोतोमग्नानपि पथि नयस्त्व दुराशावशेन।
> रुग्णे स्तोके स्वमिव जननी तत्कषायं पिबन्ती
> तत्तद्वर्णाश्रमविधिविवश क्लिश्यसे
> रङ्गराज ।। (४५)

भट्टर स्वामीजी की वाणी कुछ कठिन है। इसका पूर्ण विवरण करने पर इस लेख का कलेवर बहुत बढ जायगा। अतः विस्तार छोड कर सक्षेपतः तात्पर्य मात्र बतावेंगे। भगवान ससारियो के विषय में हितपर हो उनके उद्धारार्थ सर्वदा कई उपाय करते ही रहते है। तथापि उनके इन सभी प्रयत्नों को निष्फल बनाते हुए ये जन कुमार्ग में चलकर अपने कुसंस्कारादि के प्रवाह में ही मग्न रहते हैं। तथापि भगवान की 'दुराशा' इतनी प्रबल होती है कि वे मान बैठे हैं कि कोई न कोई दिन ये पापी जन सन्मार्ग में आयेंगे ही, और तदर्थ प्रयत्न करते ही रहते हैं। जैसे दुधमुँह बच्चे के बीमार होने पर माता उसके लिए स्वयं कडवी दवा पीती और पथ्य का ख्याल रखती, इसी प्रकार भगवान भी ससारियों के उद्धारार्थ स्वयं उनके बीच (अवतार ले) आकर, उनके ही समान वर्णाश्रमादि धर्मो का ठीक अनुष्ठान करते हुए क्लेश पाते है। अर्थात ससारियो के उद्धारार्थ ही भगवान अवतार लेते हैं।

यदि भगवान कभी अवतार नही लेते तो उनके शुभगुणों का कोई उपयोग ही नहीं होगा और अतएव नही के समान होंगे। अर्थात हम कभी समझ नहीं सकेंगे कि वे शुभगुणो का भडार है। अततः उनकी सत्ता मे भी शंका होगी। अर्थात् भगवान के बहुत-एक गुणो का उपयोग ससार मंडल में ही हो सकता है और अतएव उन्हें अपने गुणों को प्रकाशित करनेके लिए ससार मडल में अवतार लेना पडता। एव भगवच्चरित्रों है का भी प्रकाशन अवतार रूपों में ही हो सकता है। भगवान के रामावतार लेने से ही रामायण ग्रथ वाल्मीकि से रचाया गया। यदि रामावतार ही नही होता तो रामायण कैसे जन्म लेता यदि रामायण का अवतार नही होता तो हम कैसे उसमें उपवर्णित चरित्र एव तद्द्वारा प्रपंचित उनके गुणों का परिचय पाते? देखिए, भगवान अपने ज्ञान से भक्तो के अज्ञान को दूर करते, शक्ति से उनकी इच्छा पूर्ण करते, माने ससार मंडल से उनको उठाते, दया से दुःखियों को अश्वासन देते, क्षमा से, पापी के पाप की परवाह नही करते, इत्यादि परमपद में भगवान के नित्यसान्निध्य में रहने वाले सभी मुक्त व नित्य जन "परम साम्यमुपैति" इत्यादि उपनिषद् के अनुसार उनके ही समान समस्त दोष-दूर और ऐश्वर्यादियुत होते हैं; वहा पर कोई दुःखी, पापी, सापेक्ष इत्यादि होता ही नहीं। अतः भगवान के गुण वहां पर दिन मे जलाये हुए दीप की भाँति प्रकाश-हीन रहते हैं। ससारमंडल में आने पर ही रात पर जलाये हुए दीप की भाँति अत्यत उज्वल दीखने लगते है। अतः ठीक कहा गया कि अपने गुणों के प्रकाशनार्थ भगवान अवतार लेते है।

इस प्रकार भगवद्वतारों के कई प्रयोजन होते हैं। *


## श्री पद्मावती देवी का मंदिर, तिरुचानूर.

### अर्जित तिरुप्पावडा सेवा

भक्तजन रु० १५००/- चुकाकर इस सेवा में भाग ले सकते है। १२ लोगों तक इस सेवा को दर्शन कर सकते हैं। और उनको तिरुप्पावडा प्रसाद के अलावा लड्डू, वडा, अप्पम व दोसै में १/४ सोला का प्रसाद भी दिया जायगा। तथा उन्हें वस्त्र और इनाम से सन्मान किया जायगा। अतः भक्तजन इस सदवकाश का उपयोग करें।

ति. ति. देवस्थान, तिरुपति.

# सूरसागर के कूटपदों के पाठ तथा अर्थ की समस्याएँ और समाधान

(गताङ्क से)

इसमें कुछ देवताओ की सवारियाँ तो निश्चित है, लेकिन कुछ में लोगो ने अनुमान का सहारा लिया है। इसमें 'गुदरारो' का ठीक अर्थ न जानने के कारण काफी गडबडियाँ पैदा हुई। वास्तव में 'गुदरारो' गरुड पक्षी के लिए आया है, और इसका अन्य पाठ 'गुडरारो' भी मिला है, सभवत गुदरारो की जगह गुडरारो अच्छा एव कविसम्मत पाठ प्रतीत होता है। इसके आधार पर पूरी पक्ति में प्रयुक्त सवारियो की सगति ठीक से लग जाती है। दूसरे शब्दो में धर्मराज की सवारी महिष, बनराज (जल के देवता वरुण) का मगर, अनल का मेढा (भेड), नारद का मन, शिवसुत (स्वामि कार्तिकेय एवं गणेश) का क्रमश मयूर एव चूहा और सरस्वती की सवारी गरुड होगी। यहाँ यह आपत्ति हो सकती है कि सरस्वती की सवारी तो हंस है गरुड़ कैसे? इस सम्बन्ध में निवेदन यही है कि हस ऊपर की पंक्तियो में चतुरानन के लिए प्रयुक्त हो चुका है, अत. हस सवारी का यहाँ कोई औचित्य नहीं है। हाँ, यह अवश्य है कि सरस्वती के लिए गरुड सवारी प्रचलित नहीं है, पर पुराणो में सरस्वती विष्णु पत्नी के भी रूप में अभिहित की गई है, और नैषधकाव्य के ग्यारहवें सर्ग के चौसठवें श्लोक में भी उन्हें

डा० किशोरीलाल

विष्णु-पत्नी के रूप में श्री हर्ष ने चित्रित किया है। ऐसी स्थिति में यदि वे गरुड पर सवार होती है तो इसमें किसी भी प्रकार की दूरारूढ़ कल्पना नहीं कही जा सकती।

सूर के कूटो में न जाने कितने ऐसे सकेत छिपे रहते है, जिन्हें जाने बिना अर्थ की ठीक पकड सभव नहीं। जो पाठक सूर्य को ग्यारह की संख्या का प्रतीक नहीं समझेगा, वह यदि केवल सूर्य के आधार पर अर्थ करने की चेष्टा करेगा तो निश्चय ही असफल होगा। एक नमूना लें—

"वाजापति अग्रज अम्बा तेहि अरक-थान
सुत मालगुंदहि।"

यहाँ वाजा, लक्ष्मी और उनके पति विष्णु या श्रीकृष्ण, श्रीकृष्ण के अग्रज बलराम, बलराम की माता रोहिणी—रोहिणी एक नक्षत्र भी है तथा रोहिणी नक्षत्र से सूर्य (अर्क) स्थान अर्थात् ग्यारहवाँ स्थान स्वाती का है इस प्रकार यहाँ स्वाती सुत से मोती अर्थ निकलेगा।

इसी तरह सूरदास का एक प्रसिद्ध पद है—

कहत कत परदेसी की बात।
मदिर अरध अवधि बदि हमसौं, हरि-अहार
चलि जात ॥
ससि रिपु बरष, सूर रिपु जुगबर, हर रिपु
कीन्हौ घात।
मघ पचक लै गयौ साँवरो, तातै अति
अकुलात ॥

इसकी चौथी पक्ति का अर्थ तभी खुलेगा जब यह ज्ञात हो कि मघा नक्षत्र से पाँचवाँ नक्षत्र चित्रा होता है और चित्रा का प्रयोग कवि ने चित्त या मन के अर्थ में ग्रहण किया है। सूर-शतक के टीकाकार बालकिशन ने 'मघपचक' की जगह रविपचक पाठ माना है, तदनुसार इसका अर्थ होगा सूर्य (रविवार) से पाँचवाँ दिन बृहस्पति और बृहस्पति का पर्याय जीव या प्राण।

इसी प्रकार चौपड खेल से सम्बन्धित एक ऐसा पद मिला है, जिसकी अर्थ-समस्या अभी


पढ़िये ! पढ़िये !! पढ़िये !!!

**अन्नमाचार्य और सूरदास**
का
**तुलनात्मक अध्ययन**

लेखक: डा० एम्. सगमेशम्, एम ए पी-एच डी.

उत्तर भारत के कृष्णभक्ति के प्रमुख कवि सूरदास और दक्षिण भारत के श्री बालाजी के भक्त व पदकविता पितामह अन्नमाचार्य समकालीन थे। इस ग्रथ में उनके जीवन व साहित्य क साम्य-वैषम्य के बारे में सम्पूर्ण विवेचन किया गया है।

इस शोध प्रबंध में लेखक की मौलिक सूझबूझ और गहन अध्ययन स्पष्ट गोचर होती है। अत: साहित्यप्रेमी तथा पण्डित व भक्त जनों को अवश्य इस ग्रथ को पढना चाहिए।

आकर्षक रंगों में सुदर मुखचित्र के साथ एक प्रति का मूल्य रु० ८—७५/—

प्रतियों के लिए लिखिए : सम्पादक,
प्रकाशन विभाग,
ति. ति देवस्थान, तिरुपति

## श्री वेदनारायण स्वामीजी का मंदिर, नागलापुरं।

### दैनिक – कार्यक्रम

प्रात:

| | | |
|---|---|---|
| सुप्रभातम् | — | प्रात: ६–०० बजे से ६–३० बजे तक |
| विश्वरूप सर्वदर्शनम् | — | ,, ६–३० ,, ८–३० ,, |
| तोमाल सेवा | — | ,, ८–३० ,, ९–०० ,, |
| सहस्त्रनामार्चना | — | ,, ९–०० ,, ९–३० ,, |
| पहलीघटी, बचि व सात्तुमुरै | — | ,, ९–३० ,, १०–०० ,, |
| सर्वदर्शनम् | — | ,, १०–०० ,, ११–३० ,, |
| अष्टोत्तरनामार्चना व दूसरी घटी | — | ,, ११–३० ,, १२–०० ,, |
| तीर्मानम् | — | दोपहर १२–०० बजे को |

शाम को

| | | |
|---|---|---|
| सर्वदर्शनम् | — | शाम को ४–०० बज से ६–०० बजे तक |
| तोमाल, अर्चना व रात का कैंकर्य | — | रात के ६–०० ,, ७–०० ,, |
| सर्वदर्शनम् | — | ,, ७–०० ,, ८–४५ ,, |
| एकांत सेवा | — | ,, ८-४५ ,, ९–०० ,, |
| तीर्मानम् | — | रात के ९–०० बजे को |

अर्जित सेवाओं की दरें :—

| | |
|---|---|
| अर्चना . | रु ३/- |
| हारती . . | रु. २/- |

ति. ति. देवस्थान,
तिरुपति


भी बनी हुई है, इसमें कूटशैली का प्रभाव काफी स्पष्ट है। बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर को इसके पाठ-सशोधन में भारी कठिनाई का सामना करना पड़ा है। उनके अनुसार यह पद केवल नागरी प्रचारिणी सभा काशी, लखनऊ और कलकत्ता की सन् १८८९ की मुद्रित तथा कलकत्ता के बाबू पूर्णचन्द्र जी नाहर की हस्त-लिखित प्रतियो में ही प्राप्त होता है। तीनो के पाठो में बडा अन्तर है और चरणो की सख्या भी न्यूनाधिक है। चरणों की सख्या की दृष्टि से नागरी प्रचारिणी सभा वाली प्रति में केवल सोलह चरण है, पर कलकत्ता और लखनऊ की मुद्रित प्रतियो में पचास चरण हैं। पाठ तीनों के ही गड़बड है, पर नागरी प्रचारिणी सभा वाली प्रति का पाठ अन्य पाठो की तुलना में सूरदास की प्रणाली से कुछ अधिक मिलता है। रत्नाकर जी ने वही पाठ स्वीकार किया है। उक्त पद का पाठ यो है –

चौपरि जगत मड़े जुग बीते।
गुन पाँसे, क्रम अक, चारि गति सारि, न
कबहूँ जीते।
चारि पसार दिसानि, मनोरथ घर, फिरि फिरि
गिनि आनै।
काम-क्रोध-मद-संग मूढ़ मन, खेलत हार न
मानै॥
बाल-बिनोद बचन हित-अनहित, बार बार-
मुख भाखै।
मानो बग बगदाइ प्रथम दिसि, आठ-सात-
दस नाखै॥
षोडस जुक्ति, जुवति चित षोडस, षोड़स
बरस निहारै।
षोडस अगनि मिलि प्रजक पैठ-दस अक
फिरि डारै॥
पन्द्रह पित्र-काज, चौदह दस-चारि पठे, सर
सांधे।
तेरह रतन कनक रुचि द्वादस, अटन जरा
जग बाँधे॥
नहिं रुचि पंथ, पयादि डरनि छकि, पच
एकादस ठानै।
नौ दस आठ प्रकृति तृष्ना सुख, सदन सात
सधानै॥

पंजा पच प्रपच नारि पर भजत, सारि फिरि
मारी ।
चौक चवाउ भरे दुविधा छकि, रस रचना
रुचि धारी ॥
बाल किसोर, तरुन, जर जुग सो, सुपक
सारि ढिग ढारी ।
सूर एक पोनाम बिना नर, फिरि बाजी हारी ॥

चौपड़बाजी भारत के प्राचीन खेलो में गिनी जाती है। इसका उल्लेख अबुलफजल ने 'आइने-अकबरी' में भी किया है। इस खेल में सोलह मुहरे होते हैं। चौपड पाँसों से खेली जाती है। पाँसे सख्या में तीन होते हैं। प्राय. चार व्यक्ति इस खेल में भाग लेते हैं और दो-दो व्यक्तियों की जोड होती है, प्रत्येक खिलाडी के पास चार-चार मुहरें होते हैं। ऊपर के पद में भी कुछ इसी प्रकार का संकेत है। कवि का आशय यह है कि तीन गुण (सत्, रज, तम) के पाँसे कर्म रूपी अंको से एव चारो गति (बाल्य, किशोर, यौवन, वार्द्धक्य) रूपी गोटो से कभी जीत नहीं हुई। (कभी भी जीव संसार के चक्र मे मुक्त नहीं हुआ)।

सूरसागर के कूटपदो में आलकारिक शैली के कूटो की सख्या अधिक है। शब्दालंकार के अन्तर्गत परिगणित होने वाले कूटों में यमक का ही बाहुल्य है और प्रहेलिका तथा बहितीपिक वाले कूट इसमें नहीं मिलते। इस ढंग के कूट 'साहित्य लहरी' में ही मिलते हैं। अर्थालकारों के अन्तर्गत जिन अलकारों में अर्थगोपन की प्रवृत्ति पायी जाती है, उनमें सूक्ष्म रूपकातिशयोक्ति और युक्ति का उल्लेख होता है। सूर ने शब्द क्रीडा का चमत्कार सारग शब्दों की अनेकशः बार आवृत्ति करके स्थल-स्थल पर प्रदर्शित किया है। इनके सारंग शब्द को देख कर एक बार बुद्धि चकित अवश्य होती है, परन्तु जब इसके ऊपर का अर्थ-गोपन का पर्दा हट जाता है तो इससे काव्य की जिस सरस अनुभूति का आनन्द प्राप्त होता है, उसे खोदा पहाड़ निकली चुहिया जैसी वस्तु कह कर तिरस्कृत नहीं किया जा सकता। 'सारंग' शब्द की चमत्कृति और वैशिष्ट्य के लिए सूर सागर का यह पद अलम् होगा—

सारँग, सारँगधरहिं मिलावहु ।
सारँग विनय करत सारँग सौं, सारँग
बिसरावहु ॥
सारँग-समै दहनि अति सारँग, सारँग,
तिनहि दिखावहु ।
सारँग-गति सारँगधर जेहैं, सारंग जाइ
मनावहु ॥
सारँग चरन सुभग कर सारंग, सारंग, सारँग
नाम बुलावहु ।
सूरदास सारँग उपकारिनि, सारँग मरत
जियावहु ॥

राधा अपनी सखी से कह रही है—हे सारग सखी! मुझे तुम (सारग=गिरि+धर) श्रीकृष्ण से मिला दो। मै तुमसे (सारंग=सखी से) (सारंग=आकाश, आकाश का पर्याय अनन्त) विनय कर रही हूँ, अतः तुम मेरे सारग (काम) पीडा को दूर कर दे। हे सखी, रात्रि के समय (सारंगसमै) सारग (चन्द्रमा) मुझे जलाया करता है, इसलिए उसे सारग (राहु) दिखाओ (जिससे डर कर वह भाग जाय)। सारंगधर (गिरिधर) सारंग-गति वाले है, (सर्पगति, वक्रगामी स्वभाव के हैं) तू ऐसे टेढ़े स्वभाव वाले को, सारग (प्रेमपूर्वक) मना। उनके चरण और हाथ दोनों ही कमल (सारग) तुल्य हैं, और वे सारंग (भ्रमर) है—इन प्रेमिकाओं से मिलनेवाले हैं। तू सारग (सखी) की उपकारिणी है, अत. अपनी मरती हुई सारग (सखी) को मरने से बचा ले।

अर्थालकारों में रूपकातिशयोक्ति का प्रयोग सूर ने सूरसागर में कई स्थलो पर किया है। दानलीला के प्रसंग में तो कई रूपकातिशयोक्ति मिली है। सूर की एक प्रसिद्ध रूपकातिशयोक्ति के पाठ और अर्थ के सम्बन्ध में हिन्दी के विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। उस रूपकातिशयोक्ति का नमूना इस प्रकार है—

अद्भुत एक अनूपम बाग ।
जुगल कमल पर गजवर क्रीडत, तापर सिंह
करत अनुराग ॥
हरि पर सरवर, सर पर गिरिवर, गिरि पर
फूले कज पराग ।

# हंसगान

बी. वी. वी एस. एस सत्यनारायण मूर्ति,
एम ए.

आह मिली लोकेश्वर, प्यारा परिवार दारा
चाह छुटी, अपार भव सागर की
मोह मिटा, नश्वर निस्सार ससार का
राह लिया, विचार खडा प्रभु द्वार ।
क्षण-क्षण स्मरण रहा अक्षुण्ण बन्धु गण पर,
पूर्ण विस्मरण हुआ प्रभुविष्णु, भक्त-गण वशीकर
अर्पण-तर्पण संपूर्ण तव चरण युगल पर,
शरण-शरण भय हरण मम उद्धरण कर ।
क्रुद्ध न होओ मेरी कुबुद्धि पर,
शुद्ध हुआ अब मेरा तव ।
बद्ध हूँ स्वीकार करने दंड दे तो पर
सिद्ध क्या परिताप बढ कडी सजा !
मोह छोड तेरे अश्रय पा किसका उद्धरण न हुआ ?
हुआ उद्धरण पितृ मोह छोडा प्रहलाद का,
हुआ उद्धरण भ्रातृ मोह छोडा विभीषण का;
हुआ उद्धरण पत्नी मोह छोडा वाल्मीकि का,
हुआ उद्धरण पति मोह छोडा मीराबाई का
क्यों न होगा सर्व मोह छोडा मेरा उद्धरण ?

# दीपावली

श्री शाह जयरणछोडदास भगत,
बरोडा

भारतीय त्यौहारो में दीपावली एक प्रमुख स्थान रखती है । इसका धार्मिक एव सामाजिक दोनों दृष्टियोंसे अत्यधिक महत्व है । दीपावली आगमन के पूर्व ही सर्वत्र सब लोग अपने अपने घरों की सफाई कार्य में लीन रहते हैं एवं घर की दीवालों पर रंगाई करवाते हैं । गृहस्थ जीवनका जीर्णोद्धार दीपावली करती है। मानव समाज में सुंदर स्वच्छता का दिव्य सन्देश भी देती हैं ।

जीवन कला की शोभा के लिये धन-सम्पत्तिकी अधिष्ठात्री श्रीदेवी भगवती महालक्ष्मी जी का पूजन किया जाता हैं । महा लक्ष्मी अर्थात श्रीदेवी का ऐश्वर्य साक्षात्कार होनेसे, जीवन उद्यान में विविध रंगवाले मनोहर कुसुमों का (पुष्पों का) दर्शन होता है । इस दर्शन के अनुभव से नया आनद प्राप्त होता है ।

चतुर्भुज स्वरूप भगवान विष्णु के साथ ही लक्ष्मीजी रहती है । अर्थात चारों दिशाओं में जो अपनी दीर्घ बाहु फैलाये रखते हैं । मानव जीवनमें भी ऐसे ही चतुर्भुज अर्थात चारों दिशाओंमें पुरूषार्थ करनेवाले जीवात्माओं को ही महालक्ष्मी का पवित्र प्रेम प्राप्त होता है । अतः श्री महालक्ष्मी पूजन अनिवार्य है ।

वर्ष में एक बार ही नही परन्तु जीवन में नित्य दीपावली मनानी चाहिये एवं श्री स्तुति करनी चाहिये । इस प्रकार—

**"कल्याणानामविकलनिधिः कापि कारूण्य सीमा**
**नित्यामोदा निगमवचसां मौलिमन्दार माला ।**
**संपद्दिव्या मधु विजयिनः सनिधत्तां सपामे**
**सैषा देपी सकलभुवनप्रार्थनाकामधेनुः ।।"**

---

रुचिर कपोत बसत ता ऊपर, ता ऊपर अमृत फल लाग ॥
फल पर पुहुप, पुहुप पर पल्लव, ता पर सुक, पिक मृग मद काग।
खंजन, धनुष, चन्द्रमा ऊपर, ता ऊपर इक मनिधर नाग ॥

इस पद की तीसरी और पाँचवीं पक्ति का लोगों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से अर्थ लगाया है। कुछ लोग तीसरी पक्ति के फूले कंज पराग का अर्थ राधा की कंचुकी के बेलबूटे से लगाते है । उनकी सम्मति में कज का अभिप्राय यह भी है कि जल में उत्पन्न होने वाले कमल कई रंग के होते है और कंचुकी में बेलबूटे भी कई रग के होते है । कुछ लोगो ने कंज का अर्थ स्तन किया है और कुछ लोग मुख अर्थ ग्रहण करते है । स्व० लाला भगवानदीन ने 'अलकार-मजूषा' में इसे रूपकातिशयोक्ति के उदाहरण में रखा है और वहाँ उन्होने 'कज' मुख के अर्थ में ग्रहण किया है । एक अन्य विद्वान ने फूले कज पराग को स्तन के अग्रभाग अर्थ में स्वीकार किया है । किन्तु कंज यहाँ न तो मुख अर्थ में आया है और न पराग से संबलित होने के कारण वह स्तनों का ही बोधक है । निश्चय ही, यहाँ कुज बेलबूटे अर्थ में ही ठीक प्रतीत होता है । कज का अर्थ मुख भी ठीक नहीं लगता । मुख के लिए तो कवि ने चंद्रमा का प्रयोग किया ही है । और स्तनो के लिए गिरि भी मौजूद, फिर कज का स्तनो के अर्थ में यहाँ क्या औचित्य है ? यदि कंज को किसी प्रकार मुख मान भी लिया जाय तो भी क्रम-भग हो जायेगा, क्योकि तब रुचिर कपोत (गरदन) को बहुत पीछे स्थान मिलेगा । इसी भाँति इस पद की पाँचवीं पक्ति में प्रयुक्त मृगमद काग को लेकर विद्वानो मे काफी मतभेद बना है । कुछ पुराने टीकाकारों ने मृगमद काग का अर्थ कस्तूरी रूपी काला कौआ माना है । लेकिन कुछ लोगो के अनुसार काग पाटों के लिए आया है और यह 'काकपक्ष' का सक्षिप्त रूप है ।

सूर के विनय-पदो के अन्तर्गत एक ऐसा कूट मिला है जिसकी प्रवृत्ति कबीर की उलटबासियो जैसी लगती है । वस्तुतः इसमें प्रयुक्त शब्द अपनी विशिष्ट प्रतीकात्मकता के कारण इतने दुर्बोध एव जटिल बन गये है कि उनसे कवि का प्रकृत आशय समझना और उसकी अभीष्ट भाव-व्यजना के मर्म को उद्घाटित करना अतिशय कठिन हो गया है । सूर-काव्य के प्रेमियों को जिज्ञासा के लिए उस पद को प्रस्तुत कर देना मै उचित समझता हे—

अब मेरी राखौ लाज मुरारी ।
सकट मै इक संकट उपजौ, कहै मिरग सौं नारी ॥
और कछू हम जानति नाही, आई सरन बिहारी ।
उलटि पवन जब बावर जरियौ, स्वान चल्यौ सिरकारी ॥
नाचन कूदन मृगिनी लागी, चरन कमल पर वारी ।
सूर स्याम प्रभु अविगत लीला, आपुहिं आप सँवारी ॥

सूर-सागर के प्राप्त हस्तलेखों में यह पद प्राप्त नहीं होता, यह पद केवल कृष्णानद व्यासकृत रागकलपद्रुम से सकलित किया गया है, अतः इसकी प्रामाणिकता भी प्रायः सदिग्ध है । स्वयं रत्नाकर जी को भी यह पद किसी हस्तलेख में नहीं मिला । सूरदास ने निर्गुनियो की शैली में इस प्रकार के कूटों की रचना नहीं की और पूरे पद को देखने पर स्पष्टतया शब्दावली भी कबीर आदि निर्गुणवादियों की-सी लगती

# वियोगिनी - ब्रजाङ्गना

## मोहिनी

जब तुम्ही मेरे नहीं सपने सजाकर क्या करूँगी ।
जीवन मरण के हाट में क्या जीत की आशा करूंगो ॥

क्या करू इस जिंदगी को मौत भी आती नहीं है ।
और ये मेरी पलक के अश्रु भी थमते नहीं है ।

मौन भी रहकर जिगर की पीर तो कटती नहीं हैं ।
है उमर भी चीर द्रोपदि जो कि अब घटती नही है ॥

अब न दो मुझको हंसी मैं मुस्करा कर क्या करूगी ।
अश्रु पीकर जीगर के अबदर्द को ही थाम लूंगी ॥

कब कहा मैंने कि मेरी जिन्दगी में सार भर दो ।
और चाहा क्या कभी मुझको कोई उपहार दे दो ॥

हर घडी माँगा बिछा आँचल तुम्हारे सामने हो ।
दर्द दे दो आह दे दो निज चरण की चाह दे दो ॥

बहुत जिये दूर रहकर और जीकर क्या करूंगी ।
इस हंसी उपहास की में जिन्दगी का क्या करूंगी ॥

क्या कभी मांगी तुम्ही से जिन्दगी की कुछ अमानत ।
और क्या चाही किसी से आज तक मैंने जमानत ॥

क्या तुम्हारी उस चमकती रोशनी की चाह की थी ।
चाह भी बस जिन्दगी में चरण रज की आश की थी ॥

तुम मुझे उपहार मत दो बस यही चाहा करूंगी ।
हर घडी तेरी मधुर मुस्कान को निरखा करूंगी ॥

क्या कभी चाहा है मैंने मझदार का तुमसे किनारा ।
जिन्दगी के एक पल को मांगा था कुछ क्षण सहारा ॥

और अब चाहा कि तुम मजधार में आकर डुबादो ।
या जलादो, या बुझादो, या हमेशा को सुलादो ॥

जब तुम्हीं मेरे नहीं इस रीति का ही क्या करूगी ।
जिन्दगी की इस तपन में और जीकर क्या करूंगी ॥

(अनत सदेश की सौजन्य से).

### लेखक, कवि तथा चित्रकार महोदयों से

## निवेदन

सप्तगिरि मास-पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख कविता तथा चित्र भेजने-वाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें :—

१) लेख, कवितायें – साहित्य, अध्यात्म, दैवमंदिर तथा मनोविज्ञान – विषयों से संबंधित हों ।

२) रचनाएँ, लेख अथवा कविता के रूप में हों ।

३) लेख ४ पृष्ठों से अधिक न हों

४) पृष्ठ की एक ही ओर लिखना चाहिए ।

५) लेख, चित्र व कविताओं को उचित पारिश्रामिक दिया जायगा ।

६) यदि छाया चित्र भेजे जाय तो उनके संबंध में पूरा विवरण अपेक्षित है ।

७) किसी विशिष्ट त्योहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए तीन महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें ।

— सपादक, सप्तगिरि,

# रासलीला की प्रतीकात्मकता

वल्लभाचार्य जी के अनुसार परब्रह्म कृष्ण के विलास की इच्छा का ही नाम लीला है। लीला का एक मात्र प्रयोजन लीलानंद है। सृष्टि और प्रलय भी भगवान् की लीलाएँ है। परब्रह्म कृष्ण गोलोक में नित्य एक रस आनंद में मग्न रहते हैं। वहाँ नित्य बृंदावन, नित्य यमुना, नित्य गोपी और नित्य विहार का आनंद होता है। जब उन्हे एक से अनेक होने की इच्छा होती है, तब समग्र चराचर सृष्टि उनके अपार रूप से प्रकट होती है। उस समय गोलोक ब्रज में पृथ्वी पर उतर आता है और कृष्ण गोपागनाओ के साथ ब्रज की आनद – केलि में मग्न दिखाई देते हैं। इस प्रकार वल्लभ के अनुसार ब्रज की कृष्ण - लीलायें परब्रह्म कृष्ण की नित्य गोलोक - धाम की लीलाओं की प्रतिरूप मात्र है।

रासलीला कृष्ण माधुर्य लीलाओ के अंतर्गत आती है। यह कृष्ण की लीलाओ में अत्यन्त प्रमुख है। सूर ने सूरसागर के दशमस्कध में इसका अत्यन्त विस्तार के साथ वर्णन किया है —

शरद् की पूर्णिमा की रात थी। चाँदनी छिटक रही थी। यमुना का पुलिन रमणीक था। त्रिविध पवन बह रहा था। बृंदावन में नाना प्रकार के पुष्प विकसित थ। ऐसी सुरम्य प्रकृति को देखकर कृष्ण ने समस्त गोपियो के नाम लेते हुए वेणुनाद किया। इससे गोपियाँ अत्यन्त व्याकुल हुई। उनमें कृष्ण से मिलने की उत्कठा तीव्र होने लगी और वे कुल - मर्यादा, संकोच तथा लोक - लज्जा छोडकर कृष्ण से मिलने केलिए भादो के जल - प्रवाह की भाँति चल निकली।

कृष्ण चीर - हरण - लीला के द्वारा गोपियो के संकोच, लोक - लज्जा तथा कुल - मर्यादा का निवारण कर चुके थे, जिसका रासलीला की स्थिति तक पहुँचते - पहुँचते अभाव दिखाई पड़ता है। फिर भी कृष्ण ने यह परीक्षा लेनी चाही कि उनमें अभी सकोच, लोक - लज्जा तथा कुल - मर्यादा शेष है कि नहीं। इसलिए उन्होंने उनको वेद - मार्ग का उपदेश देकर अपने - अपने घर चले जाने की सलाह दी। किन्तु गोपियों ने उनकी बातें नहीं मानीं। उन्होंने कृष्ण को ही अपना सर्वस्व बताया। गोपियो को परीक्षा में उत्तीर्ण पाकर कृष्ण ने चीर - हरण लीला के समय दिये हुए आश्वासन के अनुसार रास - लीला का आरम्भ किया।

कृष्ण रास - मण्डली के मध्य में थे। राधा उनके वाम - भाग में थी। गोपियाँ उनके चारों ओर थीं। उनकी अष्ट नायिकायें आठ दिशाओं में शोभा पाती थीं। रास मंडली के बीच राधा - कृष्ण ऐसे अभिन्न थे मानो वे बिजली और बादल हो या दोनो मिलकर एकरूप हो गये हो। गोपियाँ जितनी थीं, उतने ही रूप धरकर कृष्ण उनके साथ नाचने लगे। गोपियों की नाट्य - मुद्रा के अनुरूप ही कृष्ण नृत्य - भंगिमा धारण करते थे।

रास - सुख से गोपियो का गर्व बढ़ गया। कृष्ण राधा को लेकर अदृश्य हो गये। तब राधा के मन में गर्व हो गया कि मैं कृष्ण के प्रेम की एक मात्र अधिकारिणी हूँ। तब कृष्ण राधा को भी छोडकर अदृश्य हो गये। सब गोपियाँ कृष्ण के विरह से अत्यन्त होकर उनको ढूँढने लगीं। कृष्ण के वियोग से गोपियो को जो दु ख हुआ, उससे उनका गर्व गल गया। इसे जानकर और गोपियो के प्रेम को पहचानकर कृष्ण प्रकट हुए। उन्होंने गोपियो से मिलकर उन्हें आनंद प्रदान किया
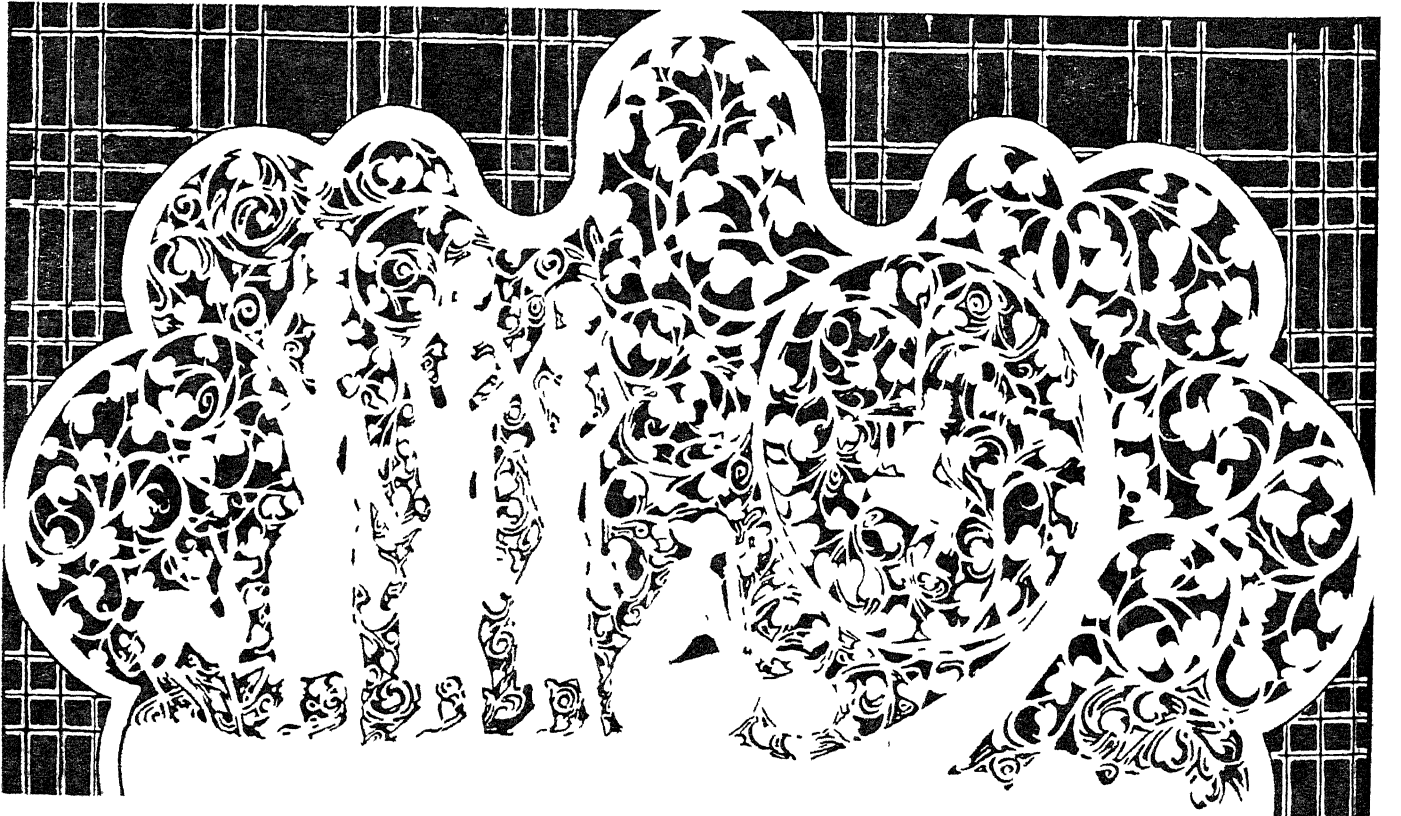
और उनके साथ फिर रास - विहार किया।

रासलीला के प्रतीकार्थ को हम तीन हरियो से हृदयगम कर सकते है — अ) आध्यात्मिक आ) योगपरक और इ) वैज्ञानिक।

## अ) आध्यात्मिक दृष्टिकोणः

(क) कृष्ण का वेणुनाद सुनते ही जो गोपी जैसी थी वह वैसी ही दौड़ पडी। इस आतुरता में किसी का चरणो में हार लिपटा था, कोई चौकी को भुजाओ में दबाये हुए थी; कोई अगिया कटि में पहने हुए थी, कोई छाती पर लहगा धारण कर गयी। कृष्ण से मिलकर वे बडे आनद से कभी नाचने, गाने और कभी कोक - विलास करने लगीं।

कृष्ण से मिलने केलिए गोपियो में जो आतुरता है, वह जीव की परमात्मा से मिलने की ही आतुरता है। कृष्ण से मिलकर गोपियो का नाचना, गाना, कोक विलास करना आदि जीव के परमात्मा से मिलकर आनंदानुभूति प्राप्त करने को सूचित करता है। इस प्रकार यहाँ

डॉ० बी. लक्ष्मय्या सेट्टी

कृष्ण परमात्मा के और गोपियाँ जीव की प्रतीक है। वेणुनाद उस शब्द का प्रतीक है। जो सारे विश्व में व्याप्त है और जो जीव रूपी गोपियों और परमात्मा रूपी कृष्ण को एक समान धरातल पर प्रतिष्ठित करता है।

रास - मण्डल में गोपियों की संख्या के अनुरूप ही कृष्ण ने रूप धारण किये। अत हर गोपी के साथ एक कृष्ण मंडलाकार रूप में थे। मंडल में कृष्ण सब गोपियो को भी मिलन - सुख देकर उनके साथ मणि - कचन के समान एक रूप हो रहे थे। कृष्ण तथा गोपियो की इस अभिन्नता के आधार पर रासलीला जीव एव परमात्मा की मिलन - प्रतीक मानी जा सकती है।

(ख) रासलीला के मध्य में गोपियो तथा राधा को गर्व हुआ कि कृष्ण उनके वश में है। उनके गर्व को देखकर कृष्ण अदृश्य हो गये। कृष्ण के वियोग में जब उनका गर्व छूट गया तभी कृष्ण ने प्रकट होकर उन्हे सुखी किया। इस दृष्टि से रासलीला जीव के अहं के छूटने पर उनके परमात्मा के मिलन की प्रतीकात्मकता को स्पष्ट करती है।

(ग) कृष्ण शब्द - ब्रह्म है। गोपियाँ वेद की ऋचायें है। जिस प्रकार शब्द और अर्थ का नित्य संबध है, उसी प्रकार ऋचा रूपी गोपियो और शब्द - ब्रह्म कृष्ण का संबध भी नित्य है। इसी का नाम नित्य रासलीला है।

(घ) 'गो' का अर्थ है इंद्रिय। अतः गोप

या गोपी का अर्थ हुआ इंद्रियो की रक्षा करनेवाला। कृष्ण आत्मा के प्रतीक है जो वशीध्वनि से गोपियो को अपनी ओर आकृष्ट करते है। जिस प्रकार इंद्रियाँ एक मन, एक प्राण होकर अतरात्मा में मग्न हो जाने की तैयारी करती है, वैसे ही गोपियाँ वशी - ध्वनि से कृष्ण की ओर चलती है। इनके पास रासलीला का नृत्य आता है जो अपनी तरंगो द्वारा गोपियो को कृष्ण - सामीप्य प्राप्त करा देता है। सामीप्य अनुभव अपनी शक्ति और अहम्मन्यता का स्फुरण करता है। अत पूर्ण मग्नता की दशा नहीं आ पाती। आत्म प्रकाश पर अहंकार का आवरण छा जाता है। पर जैसे ही कृष्ण रूपी आत्म - ज्योति अतर्हित होती है, आत्ममग्न होने की प्रेरणा तीव्र हो उठती है और अहंकार विलीन हो जाता है। अहकार के नष्ट होते ही प्रार्थक्य के समस्त बधन छिन्न - भिन्न हो जाते है। मनोवृत्तियाँ आत्मा में विलीन हो जाती है, गोपियाँ

कृष्ण के साथ महारास रचने लगती है । यही है आत्मा का पूर्णानंद में लीन होना । इस प्रकार रासलीला आत्मा के पूर्णानद में लीन होने की प्रतीक है ।

(ङ) रासलीला के समय सुहावना वातावरण या शरच्चंद्रिका थी । यमुना का तट मल्लिका का मनोहर था । त्रिविध पवन बह रहा था । वेणुनाद ने चारो ओर आह्लादमय वातावरण प्रस्तुत किया था । प्रकृति की इस सुरम्यता के आधार पर हम उसे रसमयता की प्रतीक मान सकते हैं । कृष्ण ब्रह्म है । ब्रह्म रसरूप है । राधा रसात्मक सिद्धि करानेवाली शक्तियो की प्रतीक है । रासलीला में प्रकृति, कृष्ण, राधा और गोपियाँ समान रूप से भाग लेती है । अत रासलीला रसमय प्रकृति, रस रूप कृष्ण, रस-सिद्धि रूपी राधा तथा रससिद्धि की शक्तिरूपी गोपियाँ इन सभी के सामरस्य की प्रतीक है ।

श्री बलदेव प्रसाद मिश्र ने रासलीला का योगपरक प्रतीकार्थ इस प्रकार प्रस्तुत किया है-" अनहद नाद ही भगवान की वंशी-ध्वनि है, अनेक नाडियाँ ही गोपियाँ है, कुल कुण्डलनी ही श्री राधा है और मस्तिष्क का सहस्र दल कमल ही वह सुरम्य वृन्दावन है, जहाँ आत्मा और परमात्मा का सुखमय सम्मिलन होता है तथा जहाँ पहुँचकर ईश्वरीय विभूति के साथ जीवात्मा की संपूर्ण शक्तियाँ सुरम्य रास रचती हुई नृत्य किया करती है ।" संक्षेप में सहस्रदल कमल के स्थान पर नाडियाँ, अनाहद, कुडलिनी-सब एक रस हो जाती है और परब्रह्म की योगपरक अनुभूति होने लगती है । यही समाधि का दशा है । इसे प्राप्त करना ही गोपियो का लक्ष्य है ।

लेकिन डॉ. ब्रजेश्वर वर्माने योग-क्रिया और रासलीला के कुछ उपकरणो का अन्तर इस प्रकार बताया है— गोपियो की अपरिमित सख्या शरीर मे व्याप्त असंख्य नाडियो से समानता रखती है । जहाँ तक राधा की आहलादिनी शक्ति और कुंडलिनी शक्ति का संबध है, उनमें एक विशेष अंतर है । कृष्ण की आह्लादिनी शक्ति की अनेक रूपगत अभिव्यक्तियाँ 'गोपियाँ' — ये सब क्रियात्मक है । परंतु कुंडलिनी तो एक सुप्तप्राय शक्ति है जिसे साधक जागृत करने का अनुष्ठान करता है । इसी प्रकार वंशी-ध्वनि अनाहद नाद में भी अन्तर है । अनाहद एक विशिष्ट जटिल योगपरक क्रिया से उत्पन्न वह नाद है जो इन्द्रियो को अग्राह्य है । परतु बंशी-नाद कृष्ण के 'रूप' का आश्रय लेकर समस्त ऐन्द्रिय व्यापारो को क्षण भर में एकात्म कर लेता है और इस प्रकार तल्लीनता की पराकाष्ठा तक पहुँच जाता है ।

इस प्रकार डा० ब्रजेश्वर वर्मा ने रासलील को भिन्न प्रकार की योग क्रिया बतायी है जिसे डा० वीरेन्द्र सिंह ने 'प्रेम-योग' की संज्ञा दी है । योग परक प्रतीक शुद्ध ज्ञानपरक होता है जब कि रासलीला प्रेमपरक है । इस स्थिति मे रासलीला को योगपरक प्रतीकात्मकता की दृष्टि से समझने पर उसे प्रेम-योग के रूप में समझना अधिक उपयुक्त लगता है । अत रासलीला प्रेम-योग की क्रिया-प्रतीक है ।

इ) वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

(क) सूर्यमंडल की रचना के अनुसार — ऋग्वेद में विष्णु देवता के जो विशेषण है, वे ही आगे चलकर भक्ति-सप्रदायों में कृष्ण के लिए प्रयुक्त किये गये । कृष्ण वैदिक विष्णु एवं सूर्य के विकसित रूप है । सूर्य की रश्मियाँ अनंत है जिन्हे वेदो में 'गोप' कहा गया है । अतः कृष्ण ही गोप हैं और गोपी तार का है । इसके अतिरिक्त वेदो में कृष्ण से संबधित अनेक ऐसे नक्षत्रो के नाम है, जो या तो गोपियों के या प्रमुख महिषियो के ही नाम हैं । ऐसे नक्षत्र है—अनुराधा, रोहिणी, सुभद्रा, तारका, ललिता, ज्येष्ठा, चित्रा, चन्द्रावलि आदि । सूर ने जिन गोपियो का उल्लेख किया है, उनके अधिकांश नाम नक्षत्रो के नामो से मिलते है । इन नक्षत्र रूपी गोपियो को कृष्ण लीलाओ में स्थान प्राप्त है । अतएव ब्रज से सम्बन्धित अनेक लीलाओ का किसी न किसी रूप से सम्बन्ध सूर्य (के प्रतिबिंब), तारो तथा नक्षत्रो से जोडा जा सकता है ।

सूर्य-मंडल में सूर्य ही वह केन्द्र है जिसके चारो ओर ग्रह परिक्रमा करते है । सूर ने इस कृष्ण-रवि को रास मध्यस्थ और गोपी ग्रहो को मडलाकार चित्रित कर यही तथ्य प्रकट किया है । सूर्य-मंडल की गतिविधि का प्रतीकात्मक प्रदर्शन ही यह रासलीला है । जिस प्रकार सूर्य और नक्षत्रों के अन्योन्याकर्षण से उनके मध्य सतुलन रहता है, उसी प्रकार रासलीला में कृष्ण ही वह केन्द्रस्थ शक्ति है जिसकी

(शेष पृष्ठ २५ पर)

## गंगा मैया शांति धरो

गंगा मैया शान्तनु के समय,
तुम्हारी इच्छा के अनुसार,
संसार किया,
सात बच्चों को
निर्ममता से
नदी में फेंक दिया
तब शान्तनु ने कुछ न कहा
मगर
आठवे बच्चे से
तुम्हारी और शान्तनु के
सम्बन्ध भंग हो गये
तुमने उनको छोड दिया,
लेकिन,
उसी समय के काम
आज भी क्यों कर रही हो?
क्या वशिष्ठ महर्षि का शाप
हमारी जाति से पूरी तरह
विमुक्त नही हुआ?
क्या और भी वस्तु बच गये?
क्या देव कार्य पूरा नही हुआ?
नही तो क्यों यह अधिकार,
क्यों यह बीभत्स?
क्यों यह जलोपद्रव?
क्या अभी तुम शान्तचित्त नही हुई?
अब तो हमें छोंडो और शान्ति धरो, हे
गंगा मैया ।

आर रामकृष्ण राव, एम.ए.बी.एड.,
भिलाई नगर

# श्री गोविंद्राज स्वामी का मंदिर, तिरुपति.

## दैनिक-कार्यक्रम

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रात: | 5-00 से ६-३0 तक | — | सुप्रभातम् |
| „ | 5-30 „ 7-30 „ | — | **सर्वदर्शन** |
| „ | 7-00 „ 7-30 „ | — | शुद्धि |
| „ | 7-30 „ 8-00 „ | — | तोमाल सेवा |
| „ | 8-00 „ 8-30 „ | — | अर्चना |
| „ | ४-३0 „ 9-00 „ | — | पहली घटी तथा सात्तुमुरै |
| „ | 9-00 से मध्याह्न 12-.0 तक | — | **सर्वदर्शनम्** |
| मध्याह्न | 12-.0 से 1-00 तक | — | दूसरी घटी |
| „ | 1-00 से शाम ६-00 तक | — | **सर्वदर्शनम्** |
| „ | 6-00 से 7-00 तक | — | रात के कैंकर्य |
| „ | ७-00 „ ६-45 „ | — | **सर्वदर्शनम्** |
| „ | 9-00 बजे | — | **एकान सेवा ।** |

## अर्जित सेवाओं की दरें

| | |
|---|---|
| तोमाल सेवा | रु. ४-०० |
| सहस्र नामाचना | रु ४-०० |
| एकात सेवा | रु ४-०० |
| हारती | रु १-०० |
| विशेष दर्शन | रु २-०० |

(सिर्फ सर्व दर्शन के समय पर ही प्रवेश)

---

सूचना:- एक ही व्यक्ति को अनुमति दी जाती है ।

## श्री गोविंद्राज स्वामी के मंदिर से सम्बन्धित अन्य मंदिरों के अर्जित सेवाओं की दरें

१) श्री पार्थसारथी स्वामी का मदिर
२) श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मदिर
३) श्री आण्डाल का मदिर
४) श्री पुडरीकवल्लि तायारु का मदिर
५) श्री आजनेय स्वामी का मदिर —सन्निधि वीथी के पास
६) श्री सजीवराय स्वामी का मदिर —श्री हथीराम जी मठ

अर्चना. रु. ०-७५
हारती. रु ०-२५.

## अर्जित वाहन

| | | | |
|---|---|---|---|
| १) | तिरुचि उत्सव | — | रु ६३-०० |
| २) | बडा शेषवाहन | — | रु ६३-०० |
| ३) | छोटा शेष वाहन | — | रु. ३३-०० |
| ४) | गरुड वाहन | — | रु ३३-०० |
| ५) | हनुमन्त वाहन | — | रु ३३-०० |
| ६) | हस वाहन | — | रु ३३-०० |

## भगवान को प्रसाद भोग समर्पण

| | | | |
|---|---|---|---|
| १) | शीरा | — | रु, १५५-०० |
| २) | बघार भात | — | रु. ५०-०० |
| ३) | दही भात | — | रु ४०-०० |
| ४) | पोगलि | — | रु ५५-०० |
| ५) | शक्कर पोगलि | — | रु ६५-०० |
| ६) | शक्कर भात | — | रु ८५-०० |
| ७) | केसरी भात | — | रु ९०-०० |
| ८) | १/४सोला दोसै | — | रु ३५-०० |

# आदिशंकर महिमा

(प्रथम खंड)

श्री के. एन. वरदराजन्, एम.ए. बी.एड,
कल्पाक्कम

पुण्य गाँव एक केरल में है
सब का मन वह लुभाता है
पाप को वह दूर करता है
कालडि नाम से वह ख्यात है।

शंकर के दास शिव गुरु थे
शिव की भक्ति में वे रत थे
पाप से कभी वे नहीं डरते थे
पर पाप उन से डरते थे।

आर्यमाबा पत्नी उनकी
शिरोमणि थी सतिओं की
त्याग दिया था भौतिक सुख को
देवता समझा अपने पति को

सती सिरोमणि पत्नी के साथ
सती नाथ के दर्शन करने
गये थे शिव गुरु तिच्चूर को
चूर करता जो विघ्नों को।

वृषाचलेश्वर ने तिच्चूर का
दंपतिओ का दुःख जाना
निश्चय किया था दूर करने का
उनके चिरन्तन दुःख को सहसा।

लोकहितकर शकर जी ने
कहा लोक के हित करने
"शिवगुरु तेरा पुत्र बनूँगा
शकर बनकर दुःख हरुँगा"।

शंभु की शुभ वाणी सुनकर
शिव गुरु शिव के चरणों पर
पडे, शिव की स्तुति की गुरु ने
शिव की महिमा जानी किसने?

उनकी पूजा से खुश होकर
शंकर जन्मे धरती पर
शकरार्थ का शुभरूप धरकर
धर्म का उद्धार करने भू पर।

पाँच वर्ष के जब शंकर थे
शिव गुरु स्वर्ग सिधार गए
सती शिरोमणि दुःखित पत्नी
पुत्र का पालन करने लगी।

जब शंकर आठ बरस के थे
सांग त्रयी में वे निपुण बने
इतिहासों के प्रवचन में
शुक के मानिन्द बने जग में

दुःखी हुए वे लोगों के
असंख्य दुखों को लख के
जन से उनको दूर हटाने
सन्यास लेना चाहा उन्होंने।

लोकहितंकर शकर रवि ने
अपनी इच्छा जब प्रकट की
तब माता का हृदय कुमुद
मुकुलित होगया सदा सुखद।

पास की नदी में नहाने जननी
शकर के साथ सुबह को चली
भयंकर जलचर एक मगर
गुरु चरणों को खीचने लगा क्रूर।

शंकरजी ने गद्‌गद स्वर से
आज्ञा माँगी जननी से
आपत्सन्यास तब लेने की
विवश जननी ने आज्ञा दी।

अदृश्य होगया वह क्रूर मगर
प्रसन्न हो कर अपने काम पर
तच्चरण निकला ग्राह के मुखसे
जैसे चन्दा राहु के मुख से।

कहा "धर्म का प्रचार करना
माँ! मेरा शुभ काम समझना
इस पुण्य काम से रोको मत
मुझे जननी! अब रोओ मत"

माँ ने कहाथा तब शंकर से
"करो धर्म का प्रचार खुशी से
तुम सन्यासी हो, विजयी हो
शुक्ल चन्द्र सा बढते जाओ।

कहा था माँ ने "शंकर सुन
मेरे साथ तू जरूर रह
जब मैं रहती मृत्यु की सेज पर
यह इच्छा तू पूरी कर।

शिव जननी की परिक्रमा कर
निकले घर से तब शंकर
मार्गदर्शी गुरु से मिलने
वाराणसी की ओर चले।

पावन नर्मदा के तटपर
गोविन्द गुरु को वे पाकर
सन्तुष्ट हुए थे एक दीन सा
जिसने पाई निधि सहसा।

अज्ञान तिमिरका सूरज गुरु भी
प्रतीक्षा में था शंकर की
उनको देखकर तब सहसा
खुद को समझा धन्य मनसा।

स्वागत किया गुरु ने शंकर का, निधि सा पाकर
गिरे शंकर गुरु के चरण कमल पर भाग्य समझकर
"गुरु ने कहा, प्रतिभावान् शिष्य की खोज में मै अब तक रहा
वही शिष्य जो तम को हरता भाग्यवश आज मिला"।

पूछने पर सविनय कहा "अहं ब्रह्मास्मि" शंकर ने
उत्तर से आगन्तुक को ज्ञानी समझ गुरु हृष्ट हुए

इसी व्याज से शंकर के शंकर मुख से दस श्लोक रत्न निकले
जो भवसागर में मग्न मानव के उद्धारक निकले।

ज्ञानसागर गुरु ने पूछा "नाम क्या, यहाँ आने का उद्देश्यक्या?
प्रतिभाशाली छात्र ने कहा "नाम शंकर है, लक्ष्य आपको गुरु बनालेना

अज्ञान सागर में डूब रही शंकर नौका को पार कराना,
शरणागत हूँ, तिरस्कार न करना, अनुग्रह योग्य समझाना"

तुष्ट होकर गुरु ने महावाक्य के अर्थ का बोध कराया
चतुर शिष्य ने तुरत ही यथावत् उसे ग्रहण करलिया
गुरु ने कहा"जीव और परमात्मा में कोई अन्तर नही है
जैसे मूलभूत मिट्टी मे घडा भिन्न नहीं है।

माया के कारण जीव नर को ब्रह्म से अलग दीखता है
सचमुच कपडा धागों से जग में अलग नही है
माया हटते ही "अहं ब्रह्मास्मि" का बोध होता है
तब शुद्धज्ञानरूपी जीव जीवन्मुक्त बनता है।

कहा गुरु ने ज्ञातार्थ शिष्य से मधुर वाणी में
प्रचार करो अद्वैत धर्म का वर नगर वाराणसी में
गुरु को प्रणामकर शंकर वाराणसी की ओर चलने लगे
जहाँ वेद, पुराण, इतिहास के थे पंडित बडे बडे।

शंकर ने देखा गंगा के तट पर सनन्दनाख्य वटु को
जो था चोलदेश का लुभाता था ज्ञानतेज से सब को
बनालिया गुरु ने अपना शिष्य दयासे उस वटु को
सनन्द ने धन्य समझा पाकर गुरु सा शंकर को।

सनन्दन से शंकर की प्रीति देख जले अन्य शिष्य
सनन्दन की महिमा दिखानी चाही गुरु ने उनको भव्य
गंगा में गुरु ने बुलाया तट स्थित सनन्दन को सहसा
सनन्दन भी अखडा होगया गुरु के सम्मुख शुद्ध मनसा।

(प्रथमखंड समाप्त)

## गोदावरी पुष्करों के अवसर पर

# देवस्थान की धर्मरक्षण संस्था के कार्यक्रम

१. श्री मार्कण्डेय जी के पुरातन मदिर के पास एक विशाल स्नान घाट का निर्माण किया गया ! आन्ध्रप्रदेश के मुख्य मंत्री डा० चेन्नारेड्डीजी ने इसका उद्घाटन किया।

२ श्री वेंकटेश्वर कला केंद्र, जो सुब्रह्मण्य मैदान स्थित है, म्युनिसपल कार्यालय के सामने देवस्थान की आर्थिक सहायता से अति सुंदर श्री बालाजी मदिर का निर्माण किया गया, जो कि तिरुमल में स्थित भगवान बालाजी के मंदिर के जैसा ही है।

३. इसके बाजू में एक विशाल प्रदेश मे शामियाना डाला गया, जहॉ प्रातःकाल से लेकर देरी रात तक विविध धार्मिक कार्यक्रम चलाया गया।

४ इसी के पास और एक शामियाना डाला गया। जहॉ देवस्थान के द्वारा मुद्रित ग्रंथों व पुस्तकों की बिक्री की गयी। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखकर नाम मात्र मूल्य रखा गया, जिससे पुस्तको की बिक्री अधिक सख्या में हुई। बडे बडे शहरों में स्थित पुस्तक बिक्री शालाओ से भी बढकर, यहॉ सुबह से लेकर देरी रात तक बहुत संख्या में भीडों को आकर्षित किया गया। कलेक्षन के आधार पर पुस्तकों की बिक्री करने से पता चला कि १० पैसे मूल्य वाली पुस्तको को बेचने से हर दिन रु २,००० तक मिला। जिससे कि देवस्थान से प्रकाशित पुस्तको की माग सुचित होती है।

५ हिन्दू धर्म रक्षण सस्था के अध्वर्य में 'धर्मरथ' नामक मोटर गाडी राजमड्री के आसपास तथा शहर के सडकों पर घूमता रहा तथा भगवान श्रीबालाजी का दर्शन व हिन्दू धर्म रक्षण सस्था के विविध कार्यक्रमो के बारे में प्रचार करता रहा। यह तो सतोषजनक बात है कि हर यात्री व भक्तजन इस ति ति देवस्थान की काम्पलेक्स की ओर आकर्षित रहा।

६ भगवान बालाजी के हुण्डी का वसूल एक दिन रु ५,००० तक चला गया, उसी दिन लगभग बीस हजार यात्रियों ने भगवान के दर्शन किये। औसत से हर

गोदावरी पुष्करों के अवसर पर विद्युदीपालकृत श्री बालाजी का मंदिर, राजमड्री
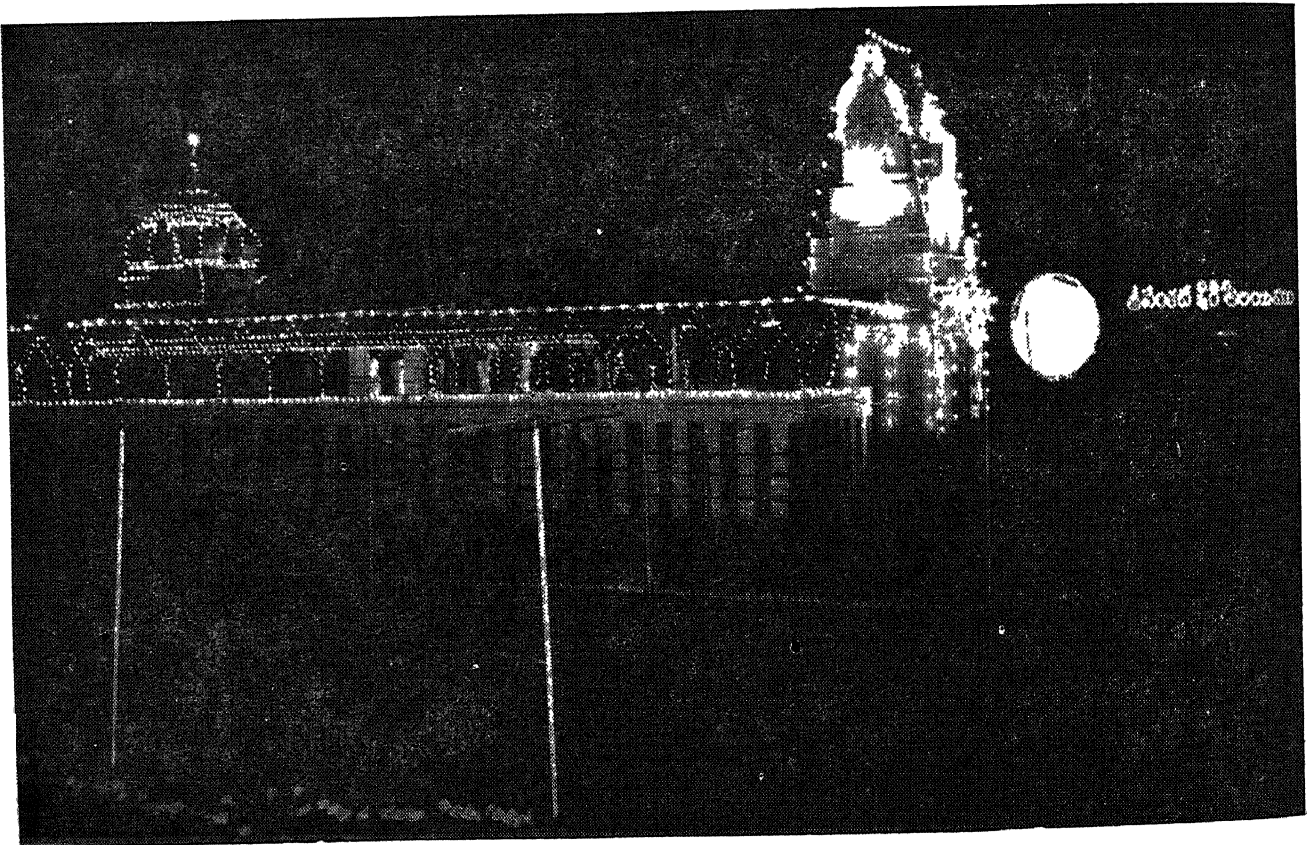
दिन दस हजार तक भक्त जन भगवान के दर्शन किये।

७ इसके अलावा भगवान श्री बालाजी के प्रसाद् लड्डू व वडा बहुत अधिक बेचा गया। हर दिन रु ४,००० तक वसूल किया गया।

८ यहाँ मनाये गये विविध धार्मिक कार्यक्रम नीचे दिये जा रहे है—

अ) कोन सीमा के प्रमुख वेद्पण्डितो द्वारा प्रात.काल को मंदिर में गान स्वस्ति तथा शाम के ६-३० बजे से लेकर ७-३० बजे के बीच में शामियाने में गान स्वस्ति मनाया गया।

मंदिर में विराजमान श्री बालाजी की मूर्ति

श्रीवारि हुण्डी

देवस्थान की पुस्तक-बिक्री शाला मे मुख्यमत्री के साथ देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी. वी. आर. प्रसादजी एव पौर सबधाधिकारी श्री रावुल सूर्यनारायणमूर्तिजी

आ) प्रमुख विद्वानों द्वारा सुबह ९ बजे बजे से लेकर १२ बजे तक धार्मिक भाषण।

इ) देवस्थान के पौराणिक विद्वानो द्वारा शाम के ३-३० बजे से लेकर ४-३० बजे तक पुराण प्रवचन।

ई) आन्ध्र प्रदेश के प्रमुख भागवतारों के द्वारा शाम के ४-३० बजे से लेकर ६-३० बजे तक हरिकथा गान। प्रमुख भागवतार श्री वंगल पट्टाभिराम, श्री अम्मुल विश्वनाथम्, श्री जी सूर्यनारायण भागवतार जी ने भाग लिये।

( शेष पृष्ठ २३ पर )

# ...र्म क्या है?

श्री लक्ष्मणाचार्युलु, एम. ए,
गुंतकल .
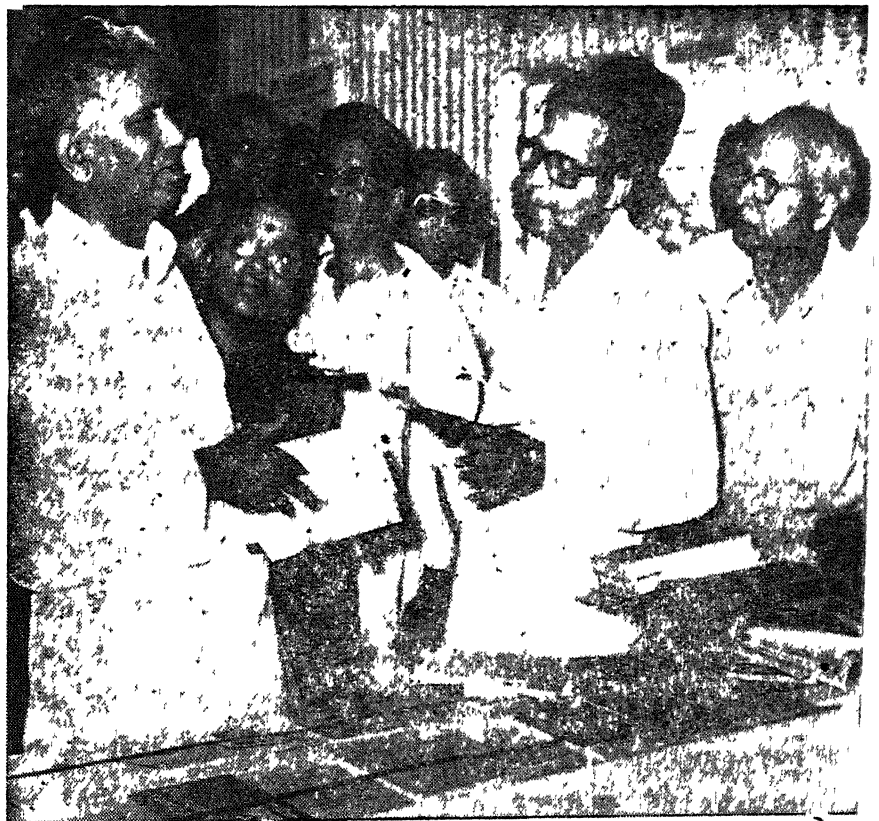
...असीम अंतरिक्ष में अनगिनत तारें हैं, ग्रह ... उप ग्रह है। ये सदा घूमते रहते हैं। यह ...ना कभी अपने चारो ओर होता है कभी ...रो की परिक्रमा भी। एक दूसरे की, दूसरा ...सरे की इस तरह सभी अपनी तथा दूसरे बडे ...लो की परिक्रमा करते हैं। मगर ताज्जुब ... बात है कि एक का अस्तित्व, एक का ...मन, एक की परिक्रमा न दूसरे की परिक्रमा ... रोकता है, न उस से टक्कर लगाता है। ...तना ही नहीं एक का गमन दूसरे की मदद ...रता है, याने आधार भी होता है। इस ...हस्य के बारे में सोचने से हमें विदित होता है ... इन सब के गमन में एक तरह का ...नुशासन है। वे अपनी सीमा अतिक्रमण कभी ...हीं करते हैं।

दुनिया विशाल है। करोड़ो लोग इस पर ...ाँस ले रहे हैं। हर एक व्यक्ति अपने को ...न्नत बनाना, अपने को हमेशा प्रगतिशील ...नाना चाहता है। अपनी — अपनी परिवार ...ी — अपने रिश्तेदारो की, मित्रो की, अपने ...श वासियो को तथा अन्यदेश वासियो की ...लाई को नजर में रखकर - वर्तमान, और ...विष्य पर ध्यान रखते हुए उसे आगे बढना ...ड़ता है। लेकिन खेद की बात है कि वह इस ...कार करने में अपने को असमर्थ साबित कर ...हा है। एक दूसरे से टकराता है, एक दूसरे ...ो रास्ते में रोड़े डालते हैं। फलतः लोग ...तितर बितर हो जाते हैं और पतन की ओर ...अग्रसर हो रहे हैं। इसका कारण व्यक्तियो ...में अनुशासन या क्रम बद्ध जीवन की कमी ही ...है। मानव का जीवन न अनुशासित है, न ...प्रायोजित है।

उपरोक्त उलझन को सुलझने के लिए पुराने ...ज़माने से ही लोग कोशिश करते आये हैं। उन्हीं यत्नों को हम स्थूलतः 'धर्म' कह सकते ...हैं। उसी को हम 'धर्म' कह सकते हैं जिसकी मदद से आदमी आसमान के तारो एव ग्रहो की तरह दूसरो को तकलीफ या अडचन न पहुँचाते हुए, पारस्परिक सहयोग करते हुए, लडाई - झगडो से दूर रहकर - पवित्र तथा शांत जीवन बिताकर अत में जाकर उस परम सत्ता में विलीन होने योग्य बन सकता है। हाँ देश एवं समय तथा परिस्थितियो के मुताबिक और लोगो के मानसिक स्तरो के अनुरूप योग्यताओ को देखते हुए कई धार्मिक - गुरुवरो मे कई धर्मों की स्थापना की गई है जिन में छोटे - बड़े अंतर है। लेकिन उन सभी का लक्ष्य एव सार एक ही है। सभी धर्मावलबियो को न उच्च - नीच के अतर है न अच्छे - बुरे। वे कहते यह भी है कि बुरी भावनाओ को त्यागकर, स्वार्थ के बिना, परहित को ध्यान में रखते हुए दूसरो के साथ उसी तरह जो बर्ताव करता है, जिस तरह वह उनसे अपेक्षा करता है, और समाज के श्रेय को ही प्रधान मानता है, वही यथार्थ धर्मावलबी है, और सही धर्म वही है जो आदमी को उस तरह का योग्य बना सकता है।

धर्म कहता है कि एक ही आत्मा कीड़े - मकोडो के जन्मो से होती हुई अत में 'मानव का जन्म' लेती है। तदुपरांत आध्यात्मिक ज्ञान पाकर भक्ति के सहारे उस परम सत्ता में विलीन होती है। इसी को 'परिणाम विकास' कहा जाता है। धर्म यह कहते हुए कि हर किसी का भाग्य उसी के हाथ में है, और अपने जीवन को नरक या स्वर्ग बनानेवाला 'खुद' ही है, न और कोई - अपने कर्तव्य के निर्णय में व्यक्ति को पूर्णतः आजादी देकर उसे क्रियाशील बनाता है।

धर्म की नजर में मोक्षपाने के लिये सभी जातियो के, वर्णो के लोग योग्य हैं। मोक्ष न किसी विशिष्ट जाति की चीज नहीं है। किसी भी जाति के लोग, किसी भी धर्म को माननेवाले अगर अनुकूल तथा उचित पद्धतियें को अपनाते हुए निष्ठा से मोक्ष की ओर अग्रसर हो सकता है। 'धर्म' इस विषय में सीढियो का काम करता है और साधक को लक्ष्य तक पहुँचता है। धर्म ऐहिक (भौतिक) मरीजो को उचित औषिध निर्वाचन एव अपथ्यवर्जन की सलाह देता है।

विश्व का श्रेय पूर्णतः तभी होता है जब सभी धर्मो के प्रवर्तक एव प्रचारक अपने भिन्न भिन्न साधनाओ के बावजूद एकता से काम करेंगे। इस के विरूद्ध अगर वे अपने ही धर्म को श्रेष्ट, उन्नत, सही, और अपने ही आचार - विचार - रीति - रिवाजो को आदर्श एव आचरणयोग्य घोषित करेंगे, तो न वे सही धर्मावलबी है न उनका धर्म सही है। धर्म व्यक्ति की शील - सपदा और चाल - चलन को उन्नत एव आदर्श बनाने की सलाह एवं पथ - प्रदर्शन भी करता है। भाव यह है कि पशुता से मानवता और मानवता से दिव्यत्व पाने के लिए धर्म से बढकर मदद करनेवाला साधन दूसरा नहीं है। धर्म यह भी वादा करता है कि पश्चात्ताप से आधा पाप मिट जाता है। फिर उसके बाद अपने चरित्र में सुधार लाकर गल्तियो और पापो को न दुहराने से ही उस व्यक्ति भगवान की शरण में जाने योग्य होता है। वह यह भी स्पष्ट कर देता है कि घर के निर्माण में नींव का जो महत्व है, वही नैतिक चरित्र का परमार्थ में है। भगवान के शासन में मानव के स्थान को भी धर्म स्पष्ट कर देता है। देश की समस्याओ का हल सरकार करता है तो उन समस्याओ के मूल भूत कारण अशांति, अतृप्ति, इच्छाएँ, काम आदि आसुरी गुणों को मानवो में से भगाकर, मानसिक परिवर्तन लाकर उस के साथ साथ हितभावना, तृप्ति, इच्छाओं का दमन, सहयोग भावना आदि पैदा करके समाज को कल्याण में हाथ बाँटता है। कुछ बडे - बूढो का पूर्ण विश्वास है

(शेष पृष्ठ २४ पर)

## आम्नाय सरस्वती

**ति. ति देवस्थान तथा काकिनाडा के श्री मधान्ध्र वेदशास्त्र परिषद के सयुक्त आध्वर्य में काकिनाडा के सूर्यकला मदिर में प्रख्यात वेदपण्डित श्री उप्पन्लूरि गणपति शास्त्रीजी को "आम्नाय सरस्वती" नामक उपाधि दिया गया। देवस्थान की ओर से मुख्य मत्री श्री चेन्नारेड्डी महोदय, कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री प्रसाद जी ने शास्त्री जी को नूतन वस्त्रो से सत्कार किये।**

(पृष्ठ २१ का शेष)

३, सुबह में निम्नलिखित प्रमुख विद्व भाषण दिये थे—

१) श्री भाष्यं अप्पलाचार्युलु २) ' वी आर शास्त्री, उस्मानिया विश्वविद्याल के विभागाधिपति ३) श्री दिवाकर्ल रा मूर्ति, भूतपूर्व प्राध्यापक, ए. वी एन काले ४) डा डी अर्कसोमयाजी, मंत्री, हि धर्म रक्षण सस्था, ति ति देवस्थान, तिरुप ५) श्री वाजपेय सुब्रह्मण्य शास्त्री, देवस्थ के प्रचारक, ६) श्री चद्रशेखर पाण सस्कृत विभाग के रीडर, केन्द्रीय सस्कृ विद्यापीठ ७) चिरंजीव सूर्यनारायण रा ८) श्री बसवराजु सुब्बाराव, विजयवा के निर्वाहक, धर्म रक्षण संस्था, ति ति देवस्थान, तिरुपति। ८) श्री पर्सा वें टेश्वर्लु, भूतपूर्व जिलाधिकारी और अ प्रमुख लोग।

वास्तव में गोदावरी पुष्कर के अवस पर ति ति देवस्थान की सेवा जनबाहुल के द्वारा प्रशंसनीय रही। देवस्थान द्वारा बनाये गये श्री बालाजी मंदिर अत्यं वैभवोपेत तथा तिरुमल पर स्थित श्री बालाज स्वयं ही भक्तजनों को दर्शन देने केलि उतने दूर से इस पवित्र पुष्करों के लि आया जैसा प्रतीत हुआ था। और इस पहले इतने बडे पैमाने पर धार्मिक प्रचा भी नही किया गया। कई निवासी लोग ने शाश्वत रूप से मंदिर को वहाँ रखने व अनुरोध भी किये। ऐसे महान कार्यक्र के द्वारा निश्चय ही लोगों में छिपी अज्ञा भी दूर हो जायगा तथा उनमें एकता का भा व धर्म के प्रति उत्साह बढेगा।

पृष्ठ २२ का शेष)

ह जबतक धार्मिक संस्थाओं, सरकार और ाजनीतिक संस्थाओ के बीच समझौता नहीं ोता, जब तक ये तीन मिलकर निस्वार्थ ावना से देश का श्रेय नजर में रखकर काम हीं करेंगे, तब तक समाज में शान्ति की थापना करना थोडे ही होगा।

अब हम यह देखेंगे कि धर्म क्या नहीं है? ो लोग यह कहते है कि अब तक धर्म के नाम र कई खून की नदियाँ बहायी गयी है, वे भ्रम में ही है। बहुत लोगों की धारणा है कि ानवों में होनेवाले कलहो के लिये मुख्य ारण स्वार्थ, अधिकार कामना, भोगलाल- ाओं की इच्छा, स्त्री और स्वर्ण का मोह ादि ही है। अपने को ही भगवान के औरस ुत्र या दास कहकर अन्य धर्मावलबियो की ावनाओ का खडन करके उन्हें गलत घोषित करने बैठे है, तो उनका धर्म, धर्म ही नहीं है और न तो वे आदर्श धर्मावलंबी है। वह धर्म नहीं है जो आदमी को कामिनी-कांचन के दास बनने की और उन को धोखे से पाने की सलाह देता है। धर्म की जगह उसे नहीं बिठा सकते जो आदमी को क्रोध के वशीभूत होने को मान लेता है। जो धर्म धनी या अधिकारी या बलवानो को दलित, कमजोर या गरीबो को सताने के लिए सहारा देगा, वह किसी भी हालत में धर्म नहीं कहला सकता। मूक जानवरो को बलि वेदी पर चढाने को समर्थन करनेवाला धर्म, धर्म ही नहीं है। बाह्याडबरो को, रूढिवादों को अधविश्वासो को स्थान देनेवाला धर्म, ढोग और ढकोसलो को आश्रय देनेवाला ही होगा। यह समाज के श्रेय का उन्नति का घातक ही सिद्ध होगा। दूसरो की राई के (तिल) समान की गलतियो को पहाड- सा बनाकर, अपने पहाड-तुल्य तृटियो को नगण्य मनानेवाला किसी भी धर्म के अवलबी हो, वह पहले मानव कहलाने योग्य नहीं बन सकता। धर्म, जाति और ईश्वर के नाम पर लाभ उठानेवाला, अपने ही स्वार्थ सिद्धि को महत्व पूर्ण स्थान देनेवाला-चाहे जो भी हो- किसी भी धर्म को स्वीकार करने केलिए अयोग्य होगा। अतः इस अवसर पर जनता से मेरी प्रार्थना है न वे इस तरह के ढोंगी प्रचारको को मौका दें और न वे इस विषय मे असावधान रहें। जैसे कबीर ने कहा-सभी धर्म अच्छे है। सभी ईश्वर तक पहुँचानेवाले हैं। मन को पवित्र रखना और दूसरो की भलाई करना सब से बड़ा धर्म है। सभी को यही बात हमेशा याद रखनी चाहिए। तभी देश का कल्याण होने में संदेह कभी भी नहीं होगा।

(श्री मुत्तेवी उडयवर की प्रेरणा से)

★ ★ ★ ★ ★


# यात्रियों से निवेदन

हिमालय की विभूतियों - बद्रीनाथ, केदारिनाथ, गंगोत्री तथा यमुनोत्री आदि पुण्यस्थलों-की यात्रा के अवसर पर कृपया

## ति. ति. देवस्थान के

## १. श्री वेंकटेश्वर स्वामी मन्दिर तथा
## २. श्री चन्द्रमौलीश्वर स्वामी मन्दिर-हृषीकेश

के दर्शन कर कृतार्थ होवें।

यहां पर भक्तजनों केलिए मुफ्त धर्मशालाएं तथा सुविधाजनक (Furnished) आवास - सुविधा मिलेगी।

(पृष्ठ १६ का शेष)

ओर गोपियाँ आकर्षित है। जिस प्रकार सूर्य मंडल में एक गति है उसी प्रकार रास में एक गतिबद्धता है, जिस प्रकार सूर्य अपनी तेजशक्ति से अभिन्न है इसी प्रकार कृष्ण अपनी अंतरग शक्ति राधा से अभिन्न है। इस प्रकार राधा सूर्य की तेजस् शक्ति की प्रतीक है।

जिस प्रकार 'शब्द' अथवा आकाश तत्त्व से सौर-मडल को एक गतिबद्धता प्राप्त होती है, उसी प्रकार कृष्ण की वंशी-ध्वनि से संपूर्ण सृष्टि तल्लीनता एवं गतिबद्धता को प्राप्त करती है, जो महाभूत आकाश है वही बृन्दावन है। इस प्रकार कृष्ण सूर्य के, राधा सूर्य की तेजस् शक्ति की, गोपियाँ नक्षत्रो की. वशी-ध्वनि शब्द की और बृन्दावन महाभूत आकाश का प्रतीक है। इस विवेचन के आधार पर हम रासलीला को सूर्यमंडल की गतिविधि की प्रतीक समझ सकते है।

(ख) परमाणु सिद्धांत के अनुसार: परमाणु सिद्धात के अनुसार परमाणु का केन्द्र केन्द्रक (Nuclues) होता है। उनकी चारो ओर ऋणाणु (Electrons) परिक्रमा करते रहते है। उनकी कक्षा निश्चत है। एक परमाणु दूसरे की कक्षा में अतिक्रमण नहीं करता। केन्द्रक के अन्तर्गत अनेक शक्तितत्त्व निहित माने जाते है जिन्हें प्रोटान, न्यूट्रान और पाजिट्रान कहते हैं। परमाणु की इस रचना और रासलीला की गतिविधि में समानता है। जिस प्रकार केन्द्रक परमाणु का केन्द्र है, उसी प्रकार कृष्ण रास-मडल के मध्यस्थ हैं। जिस प्रकार ऋणाणु केन्द्रक की परिक्रमा करते है, उसी प्रकार गोपियाँ कृष्ण के चारों ओर स्थित हैं। परमाणु के बीच जो शक्ति-तत्त्व है वही रास-मंडल की राधा है। इस प्रकार कृष्ण केन्द्रक के; गोपियाँ ऋणाणुओ की और राधा प्रोटान, न्यूट्रान और पाजिट्रान की सम्मिलित शक्ति की प्रतीक है। जिस प्रकार परमाणु की विस्फोटक शक्ति ऋणाणु के क्रियात्मक रूप पर अवलबित है, उसी प्रकार कृष्ण की प्रसारिणी शक्ति (लीला) भी राधा तत्त्व तथा गोपी नामक शक्तियो से विस्तार पाती है। इस प्रकार रास-लीला परमाणु की इस अनतता की प्रतीक भी हो सकती है।

ऊपर रासलीला की जो प्रतीकात्मकता बतायी गयी है, उसे सही दृष्टि से समझने पर उसे शृंगारात्मक मानकर हेय समझने का भ्रम दूर होता है। ★


## विशेष दर्शन के रु. २५ टिकट

**श्री बालाजी के विशेष दर्शन के रु. २५ टिकट आन्ध्र प्रदेश के बाहर आन्ध्र बैंक की निम्नलिखित शाखाओं में मिलती हैं।**

---

| | |
|---|---|
| पाट्ना | पूरी |
| टाटानगर | रूर्केला |
| अहमदाबाद | मद्रास (मुख्य) |
| बरोडा | मैलापूर |
| सूरत | टी-नगर |
| बेंगुलूर (एस. आर. रोड) | षेनायनगर |
| रामराजपेट (बेंगुलूर) | कोयंबत्तूर |
| बल्ळारि | मधुरै |
| गगावती | सेलं |
| रायचूर | तिरुप्पूरु |
| होसपेट | कलकत्ता |
| त्रिवेण्ड्रम् | ठ्यालिगज (कलकत्ता) |
| एर्नाकुलम् (कोचिन) | खरगपूर |
| भोपाल | दुर्गापूर |
| जैपूर | चंडीघर |
| जबलपूर | कर्नाट सर्कस (नई दिल्ली) |
| बम्बई (मुख्य) | करोल बाग (नई दिल्ली) |
| चेम्बूर (बम्बई) | रामकृष्णापुरं (नई दिल्ली) |
| मातुंग (बम्बई) | लक्नो |
| नागपूर | इलहाबाद |
| भुवनेश्वर | वारणासी |
| बहेंपूर | लुधियाना |
| रायगड | |

# दशावतार

डा० उमारमणझा, एम. ए., पी. एच डी.
श्री रणवीर केन्द्रीय सस्कृत विद्यापीठ,
जम्मूतवी.

मत्स्य कूर्म वराह नरहरि वामन परशुराम अवतार
राम कृष्ण और बुद्ध रूप में श्रीकल्कि ये दश अवतार ।
परित्राण ऋषियों को करने खल दुर्जन का कर सहार
रक्षा धर्म मूल है जिनका युग युग में लेते अवतार ॥ १ ॥

जिसने पहले मत्स्य रूप में कृतयुग में अवतार लिया ।
महाबली शंखासुर से भी वेदों का उद्धार किया ।
वेद पुरुष श्रीमत्स्य रूप में जग का क्लेश मिटाया था
अद्भुत अपने तेन रूप का चमत्कार दिखलाया था ॥ २ ॥

रत्नाकर है सिन्धु जान कर सुर असुरों ने किया उपाय
व्यग्र हुए थे सभी परस्पर कैसे अमृत झट मिल जाय।
कूर्म रूप श्रीहरि ने गिरि को अपने ही पीठ उठाया था
परित्राण देवों का करने प्रभु ने रूप बनाया था ॥३॥

हिरण्याक्ष दानव ने देखा कोई नहीं वैसा भयकर
पृथ्वी को लेकर उसने झट सागर मध्य था किया प्रयाण ।
सुन कर हाहाकार हरिने विकट वराह का रूप किया
सागर से पृथ्वी को लाकर कार्य बहुत अद्भुत किया ॥ ४ ॥

विष्णु भक्त प्रह्लाद सदा ही देव देव का नाम लिया
बचपन से ही जिसने दैवी शक्ति को पहचान लिया।
जान लेने पर तुले हुए उस, हिरण्यकश्यपु पर किया प्रहार
नख से ही मार गिराया था, ऐसा वह नरहरि अवतार ॥ ५ ॥

दानी महाबली हैं जग में सुनकर सुर घबराये थे
देव जनों की कीर्ति नष्ट हो जाने से अकुलाये थे ।
वामन रूप बनकर जिस ने बलि राजा का तोडा मान
कूर्म मीन में रूप उन्ही का पापी जिन्हे नही पहचान ॥ ६ ॥

त्रेतायुग में हैहयवंशज का था शासन भार
उठाना से भृगुकुल का जिसने किया विरोध अपार ।
वैरीवश जमदग्नि ऋषि का, वध का लगा पापाका भार
परशुराम हो क्रुद्ध किया था क्षत्रिय का सहार ॥ ७ ॥

रावण कुंभकर्ण के भय से मचा हुआ था हाहाकार
जप तप व्रत यज्ञों में करते दैत्य विघ्न थे विविध प्रकार ।
मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर किया राम ने खल संहार
राम राज्य की नीति अभीतक, है चला रही ससार ॥ ८ ॥

पूतना को जो पाठ पढा कालीय का मद को चूर्ण किया
चीर हरण में अबला को झट वस्त्रों से परिपूर्ण किया ।
कस आदि दुष्टों को मारा, अर्जुन को गीता का ज्ञान
कृष्ण रूप अवतार विष्णु को शत शत करूँ प्रणाम ॥ ९ ॥

कलियुग में पशुभाव भयकर, होता घर घर अत्याचार
मिथ्या दानी सब अभिमानी छोड़ चला था कुल आचार ।
नष्ट-भ्रष्ट हो गया अहिंसा व्रत को देखा था भगवान्
बुद्ध रूप में प्रकट हुए थे देने को जो ज्ञान ॥१०॥

छिन्नभिन्न हो गया सनातन धर्मनाम का हुआ अभाव
कठिन कुठार ले कलियुग ने भी लगा दिखाने स्वयप्रभाव ।
आकर श्री कल्कि प्रभु ने फिर दुष्टों पर था किया प्रहार
बार-बार ऐसे ही विभु का होता है अवतार ॥ ११ ॥

अन्ध्रदेश के सप्तगिरि पर उसी विष्णु का वास है
जग भर में विख्यात वही जो, प्रार्थित देव श्रीनिवास है ।
हृदय कमल ले पुष्पाञ्जलि को, करता सादर अर्पण
दास रूप में भक्तजन करता यह आत्म समर्पण॥१२॥

# श्री वेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मंदिर, तिरुमल.

## अर्जित सेवाओं की दरें

### विशेष दर्शन . रु. 25-00

सूचना — एक टिकट के द्वारा एक ही दर्शनार्थी भगवान के दर्शन प्राप्त कर सकेगा।

I. सेवाएँ :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ अमत्रणोत्सव | रु 200 | ६ जाफरा बरतन (Vessel) | रु. 100 |
| २ पूरा अभिषेक | 450 | ७ सहस्रकलशाभिषेक | 2500 |
| ३ कर्पूर बरतन (Vessel) | 250 | ८ अभिषेक कोइल आलवार | 1745 |
| ४. पुनुगु तेल का बरतन (Vessel) | 100 | ९ तिरुप्पाबडा | 5000 |
| ५ कस्तूरि बरतन (Vessel) | 100 | १०. पवित्रोत्सव | 1500 |

**सूचना – सेवासख्या१** — इस सेवा में दो व्यक्ति ही दर्शन प्राप्त कर सकेंगे। जिस दिन प्रात काल तोमाल सेवा और अर्चना की है केवल उसी दिन रात में एकान्तसेवा के लिए भी भक्त दर्शनार्थ जा सकते है।

**सेवा क्रमसख्या २–६** — केवल शुक्रवार को मनायी जाती है। इन सेवाओं के लिए प्रवेश इस प्रकार होगा —

क्रमसख्या २ – बर्तन के साथ केवल २ व्यक्ति ·
३ – बर्तन के साथ केवल २ व्यक्ति।
४ – ६ – बर्तन के साथ केवल एक व्यक्ति।

**सेवा क्रमसख्या ८ – १०** – प्रत्येक सेवा सम्पूर्ण दिन का उत्सव है। सेवा करानेवाले भक्त को प्रसाद दिया जायगा, जिस मे बडा, लड्डू, अप्पम दोसा इत्यादि होग। इस के अतिरिक्त सेवा न ८ के लिए वस्त्र भी भेंट के रूप मे दिया जायगा। सहस्र कलशाभिषेक, तिरुप्पाबडा तथा पवित्रोत्सव सेवाओ में हर एक सेवा को १० व्यक्ति जा सकते है।

साधारण सूचना –रिवाजो के अनुसार दातम (Datham) और आरती के लिये एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना पडेगा।

II उत्सव —

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ वसन्तोत्सव | रु 2500 | ४. प्लवोत्सव | रु 1500 |
| २. कल्याणोत्सव | 1000 | ५ ऊँजल सेवा | 1000 |
| ३ ब्रह्मोत्सव | 750 | | |

सूचना :– १. **वसन्तोत्सव :–** जो भक्त वसन्तोत्सव मनाना चाहते है उनकी सुविधा के अनुसार और मदिर की सुविधा के अनुसार यह उत्सव तीन दिन अथवा उससे कम दिनो में मनाया जायगा और उन्हे वस्त्र पुरस्कार मिलेगा ।

२ **ब्रह्मोत्सव :–** इस उत्सव को जो यात्री मनाना चाहते है अपने साथ ६ साथियो को ला सकते है, तथा तोमालसेवा, अर्चना और रात की एकान्तसेवा में भाग ले सकते है। यह उत्सव तीन दिन तक अथवा उससे कम दिनो में यात्री की सुविधा के अनुसार और मदिर की सुविधा के अनुसार मनाया जायगा । उत्सव के दिनो में उस के मनानेवाले को पोगल और दोसा इत्यादि प्रसाद भी दिये जायेंगें । उत्सव के अन्त में वस्त्र पुरस्कार दिया जायगा ।

३ **कल्याणोत्सव या श्रीस्वामीजी के विवाहोत्सव के** अन्त में वस्त्र पुरस्कार और लड्डू, बडा, पापड, दोसा आदि नियमानुसार प्रसाद के साथ दिये जायेंगे ।

### III **वाहन सेवाएँ :–**

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | वाहन सेवा सर्वभूपाल वज्रकवच सहित ७२+१ (आरती) | रु | 73 |
| २ | वज्रकवचसहित वाहनसेवा स्वर्ण गरुडवाहन, कल्पवृक्ष, बडा शेषवाहन, सर्वभूपाल, सूर्यप्रभा, प्रत्येक ६२+१ (आरती) ... ... | . | 63 |
| ३ | चांदी गरुडवाहन, चन्द्रप्रभा, गज (हाथी) वाहन, अश्ववाहन, सिंहवाहन, हसवाहन, प्रत्येक ३२+१ (आरती) ... ... | | 33 |

**सूचना :–** वाहनसेवा मनानेवाले गृहस्थ को प्रसाद में एक बडा दिया जायगा ।

**साधारण सूचना :–** न ३ और ४ के लिये दातम और आरती के लिये समय और रिवाजानुसार एक एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना होगा ।

### IV **भगवान को प्रसाद ( भोग ) समर्पण** (१/४ सोला ) : –

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | दहीभात | रु | 40 | ४ | शक्करपोगलि | रु | 65 | ७ | शक्करभात | रु. | 85 |
| २ | बघार भात | .. | 50 | ५ | केसरीभात | .. | 90 | ८. | शीरा | ... | 155 |
| ३ | पोगलि(घी और मिर्चभात) | | 55 | ६. | पायसम (खीर) | ... | 85 | | | | |

**सूचना :–**भोग के बाद प्रसाद भक्त को दिये जायेंगे । भोग के बाद अपने प्रसादो को भक्त लोग आकर अपने बर्तन में स्वीकार करेंगें ।

### V. **पक्वान्नों की भेंट :—**

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | लड्डू | रु. | 450 | ४ | दोसे | रु | 100 | ७ | सुखी | रु | 200 |
| २ | बडा | . | 250 | ५ | पापड | . | 230 | ८ | जिलेबी | . | 450 |
| ३ | पोली | | 225 | ६ | तेनतोल | . | 200 | | | | |

**सूचना —**जो गृहस्थ उपर्युक्त पक्वानो की भेंट देते हैं उन्हे भोग के बाद ३० पनियारम दिय जायेगे । प्रसाद-पन्यारम को गृहस्थ स्वय आकर मन्दिर से ले जा सकते हैं । भोग के बाद मन्दिर की दूसरी घटी बजते ही प्रसाद पन्यारम दिया जायगा ।

### VI **नित्य सेवाएँ :—**

१ नित्य कर्पूर हारती रु. 21 २. नित्य नवनीत आरती रु. 42 ३ नित्य अर्चना रु 42

**सूचना :—**नित्य सेवाओ के लिये प्रथम वर्ष में अतिरिक्त रूप से देय शुल्क वर्ष के पहले हर एक सेवा के लिए अग्रिम के रूप में देना पडेगा । जो भक्त इन नित्य सेवाओ को मनाते हैं उनको भगवान के दर्शन केलिए प्रवेश नहीं मिलेगा । भक्तो की अनुपस्थिति में ही उनके नाम पर इन सेवाओ को सपन्न किया जायगा ।

———

है। ऐसी स्थिति में इस पद में प्रयुक्त शब्दो के प्रतीकात्मक रहस्य को जानने के लिए हमें बहुत कुछ सहारा सूर-काव्य के पूर्ववर्त्ती निर्गुणकाव्य-परम्परा से ही लेना पडेगा। क्या ऐसा तो नहीं है कि यहाँ मृग जीव के प्रतीक रूप में आया हो और नारी (मृगिनी) बुद्धि के प्रतीक रूप में। यदि ऐसा ही मान कर चला जाय तो इस कूट की ग्रंथि कुछ खुल सकती है और तदनुसार इसका अर्थ होगा कि सासारिक मानव भगवान् से प्रार्थना करते हुए कह रहा है कि हे मुरारि अब मेरी मर्यादा की रक्षा कीजिए— क्योंकि एक सकट तो था ही, इस संकट में दूसरा सकट भी उत्पन्न हो गया। दूसरे शब्दो में सांसारिक माया के चक्र में मेरा जीव तो फँसा ही था, बुद्धि भी माया से भ्रमित हो गई। वह मृगी (बुद्धि) कहने लगी कि मे अब कुछ नहीं जानती, तुम्हारी ही शरण में आई हूँ इस प्रकार उसने मेरा ही आश्रय ग्रहण कर लिया, (बुद्धि द्वारा जीव का आश्रय ग्रहण करने पर) तब पवन (प्राण) उलटे चलने लगे (चित्तवृत्ति अन्तर्मुखी हो गई)। जब चित्तवृत्ति अन्तर्मुखी हो गई तो बावर (जन्म-जन्मान्तरों के कर्म-संस्कार जिसके कारण जीव सांसारिक महोपदेश में बंधा रहता है) जल गए। बावर (खेत) के रक्षक श्वान (काम-वासना) सिर त्राड कर चला गया (बहिर्मुखी वृत्तियाँ, सासारिक कामनाएँ नष्ट हो गई)। इस प्रकार जीव के मोह-मुक्त होनेपर मृगिनी (बुद्धि) आनन्द से नाचने लगी और भगवान् के चरण-कमलो पर न्योछावर हो गयी।

अन्त मे, इन थोडे से शब्दो के साथ सूर-पचशती के ऐसे पुण्य अवसर पर मैं आप सब के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहूँगा, क्योकि सूर के दुर्गम एव गहन कूटों के अर्थ एव पाठ के जिस कान्तार में आपने प्रविष्ट होने का मुझे अधिकार दिया, मे उसके सर्वथा अनुपयुक्त था। इसके साथ ही मे उन सूरकाव्य के मनीषियो से भी क्षमा-याचना करूँगा जिनके विचारों का मैंने विनम्रतापूर्वक खंडन किया है।

साभार

(सम्मेलन पत्रिका)


# श्रीवेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर, मंगापुरम्.

## दैनिक पूजा एवं दर्शन का कार्यक्रम

### शनि, रवि, सोम, मंगल तथा बुधवार

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्रात: | ५–०० | से | ५–३० | सुप्रभात |
| ,, | ५–३० | ,, | ८–०० | विश्वरूप सर्वदर्शन |
| ,, | ८–०० | ,, | ८–३० | तोमाल सेवा |
| ,, | ८–३० | ,, | ८–४५ | कोलुवु तथा पचागश्रवण |
| ,, | ८–४५ | ,, | ९–३० | सहस्रनामार्चना |
| ,, | ९–३० | ,, | १०–०० | पहली घंटी |
| ,, | १०–०० | दोपहर | १२–३० | सर्वदर्शन |
| दोपहर | १२–३० | ,, | १–०० | दूसरी अर्चना व दूसरी घटी |
| | १–०० | शाम | ६–०० | सर्वदर्शन |
| | ६–०० | ,, | ७–०० | रात का कैंकर्य व रात की घटी |
| | ७–०० | ,, | ८–४५ | सर्वदर्शन |
| | ८–४५ | ,, | ९–०० | एकांतसेवा |

### गुरुवार

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्रात: | ५–०० | से | ५–३० | सुप्रभात |
| ,, | ५–३० | ,, | ८–०० | विश्वरूप सर्वदर्शन |
| ,, | ८–०० | ,, | ८–३० | पूलगि समर्पण (तोमाल सेवा) |
| ,, | ८–३० | ,, | ८–४५ | कोलुवु तथा पचाग श्रवण |
| ,, | ८–४५ | ,, | ९–३० | सहस्रनामार्चना |
| ,, | ९–३० | ,, | १०–०० | पहली घटी |
| ,, | १०–०० | दोपहर | १२–३० | सर्वदर्शन |
| दोपहर | १२–३० | से | १–०० | दूसरी अर्चना व दूसरी घंटी |
| ,, | १–०० | ,, | ६–०० | सर्वदर्शन |
| ,, | ६–०० | ,, | ७–०० | रात का कैंकर्य व रात की घटी |
| ,, | ७–०० | ,, | ८–४५ | सर्वदर्शन |
| ,, | ८–४५ | ,, | ९–०० | एकातसेवा |

### शुक्रवार

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्रात: | ५–०० | से | ५–३० | सुप्रभात |
| ,, | ५–३० | ,, | ८–०० | विश्वरूप सर्वदर्शन |
| ,, | ८–०० | ,, | ९–०० | सालिंपु, नित्यकट्ल कैंकर्य व पहली घटी |
| ,, | ९–०० | ,, | १०–०० | अभिषेक |
| ,, | १०–०० | ,, | ११–३० | समर्पण (तोमाल सेवा), दूसरी अर्चना व दूसरी घटी |
| ,, | ११–३० | से शाम | ६–०० | सर्वदर्शन |
| शाम | ६–०० | ,, | ७–०० | रात का कैंकर्य व रात की घंटी |
| ,, | ७–०० | ,, | ८–४५ | सर्वदर्शन |
| ,, | ८–४५ | ,, | ९–०० | एकांत सेवा |

**सूचना :—**

अर्जित सेवाओं की दरें :—

१) शुक्रवार के साप्ताहिक अभिषेक रु. १००/– (दो व्यक्तियो को प्रवेश)
२) अर्चना रु ३/ ३) हारती रु. १/ ४) नारियल तोडना रु. ०–५०/
५) भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण भी किया जाता है।

पेष्कार, श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर, मंगापुरम

ति. ति. देवस्थान के विविध - मन्दिरों में अर्जित सेवाओं की दरें
तथा कुछ नियम निम्नलिखित रूप से परिवर्तित की गयीं।

## श्री पद्मावती देवी का मन्दिर, तिरुचानूर.

| | |
|---|---|
| अर्चना | रु १–०० |
| हारती | रु ०–५० |

## श्री गोविन्दराज स्वामी मन्दिर, तिरुपति.

| | |
|---|---|
| तोमाल सेवा | रु ४–०० (एक टिकट) |
| अर्चना | रु ४–०० ,, |
| एकांतसेवा | रु ४–०० , |
| विशेष दर्शन | रु २–०० ,, |

## श्री बालाजी का मन्दिर, तिरुमल.

तिरुमल पर विराजमान श्री बालाजी के मन्दिर में अब तक रु २००/- चुकाकर मनानेवाली आर्जित सेवा में भाग लेने केलिए २ व्यक्तियों को प्रवेश है।

ति. ति. देवस्थान, तिरुपति.

# नवधा - भक्ति का महत्त्व

डा० एस. वेणुगोपालाचार्य,
माण्ड्या

भक्तियुग में कर्णाटक के हरिदास मधुकरी - वृत्ति के व्याज से घर घर घूमकर भगवन्नाम कीर्तन से सभी ग्रामवासियो को भक्ति तथा आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करते अपने सरल जीवन व्यतीत करते थे। पाश्चात्य विचारो के अन्धानुकरण से आजकल मधुकरी वृत्ति बहिष्कृत हो गयी है। हरिदासो की यह सेवावृत्ति भी रुक गई है। लाउड स्पीकरो तथा रेडियो में अश्लील गीतो के बदले भक्ति गीतो को सुनाने का प्रबन्ध बढे तो भारतीयो का विस्मृत सुखो साम्राज्य पुनः स्थापित होने में कोई शक नहीं है।

वन्दन अहकार तथा ममकार केलिये रामबाण है। यह साधना स्वार्थी मानव को अपनी अकिंचनता का परिचय कराके सभ्य बनाता है। हरेक धार्मिक सस्कार में वन्दन का मुख्य पात्र रहता है। चौलोपनयन, विवाह, श्राद्ध आदि में बार बार वन्दन करने पडते है। गुरुजनो और वयोवृद्धों को नमस्कार करके आशीर्वाद पाने की प्रथा अपनी अल्पता का स्मरण कराने सहायक होती है। भारतीय शास्त्रो एव पुराणेतिहासो में सन्ध्यावन्दन को भूरि भूरि प्रशसा है। जहाँ कहीं महानता है, वहाँ परमात्मा का सान्निध्य है। सूर्य नारायण, मन्दिरो में प्रतिष्ठापित भगवन्मूर्तियो, नदियो, पवित्र वृक्षो, प्राणियों तथा पर्वताग्रो में विश्वात्मा का वन्दन करने से सहज रूप से ब्रह्मानन्द करगत हो जाता है और भगवदनुग्रह सुलभ बन जाता है।

दिव्यदेशो में तीर्थ यात्रा करते वहाँ की भगवन्मूर्तियों के दर्शन प्राप्त करना, मन्दिरों आदि के चारो ओर घूमना आदि पादसेवन रूपी साधना है। पादसेवन से अहभाव का निवारण, ज्ञानवृद्धि, सामाजिक - प्रज्ञा तथा विश्व प्रेम करगत हो जाते है। लक्ष्मी जी पादसेवन भक्ति की आदि गुरु मानी जाती है। क्षीराब्धिशायी रगनाथ स्वामी के चरणकमलो की सेवा करके लक्ष्मी जी ने भक्तों को पादसेवन की महत्ता को सब से पहले दिग्दर्शन कराया है। आलवारो ने तो दिव्य क्षेत्रों की भगवन्मूर्ति के दर्शन करते २ अपनी जीवन यात्रायें प्रसिद्ध बनायी।

पांच रात्र आगम के अनुसार अर्चन बाह्य योग पद्धति है। अर्चन भक्ति में साकारोपासना के द्वारा भगवान का सामीप्य सुख साधक को स्वतःसिद्ध हो जाता है। इसमें कोई शक असंभव है कि सर्वशक्त भगवान इष्ट मूर्ति के रूप में साकारोपासक को अपने दिव्य दर्शन कराके उसे अनुग्रहीत करने समर्थ है। साकार भगवान की षोडशोपचार पूजा में उपासक पूर्णतया पावित्र्य तथा ब्रह्मानन्द प्राप्त करने योग्य बन जाता है। यह शोचनीय और अवाछनीय है कि हिन्दुओ में साकारोपासना - रूपी अर्चन भक्ति - साधना के प्रति दिनो दिन इसीलिये श्रद्धा कम हो रही है कि मुसलमान और ईसाई अर्चन एव साकारोपासना को दुत्कारते है। वास्तव में ईसाई और मुसल्मान भी साकारोपासक ही है। वे इष्टमूर्तिम् के बदले क्रास और मकबरो के पूजक है और उनकी साकार - पूजा असमर्थक है।

ईसाई भगवान को रूक्षपिता जैसे मानकर उनके प्रति दास्यभक्ति प्रकट करते है। मुसल्मान उन्हीं को क्रूर शासक मानकर भय से भयभीत दास के जैसे प्रार्थना करते है। वैष्णवो का अभिप्राय है कि भगवान करुणामूर्ति है और उनकी सेवा करना हमारा कर्तव्य है।

कुछ लोग सख्य भक्ति को दास्यभक्ति से इसलिये श्रेष्ठ मानते है कि दास्यभक्ति में उनको मनोयोग पूर्णतया नहीं मिलता है। श्री वैष्णव



## श्री कोदंडरामस्वामीजी का मन्दिर, तिरुपति.

दैनिक — कार्यक्रम

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रातः | 5–00 | से | 5–30 | तक | सुप्रभातम् |
| | 5–30 | से | 8–00 | तक | **सर्वदर्शन** |
| | 8–00 | से | 9–30 | तक | आराधना, तोमालसेवा सहस्रनामार्चना, पहली घटी |
| | 9–30 | से | 11–00 | तक | **सर्वदर्शनम्** |
| | 11–00 | से | 11–30 | तक | दूसरी घटी |
| | 11–30 | से | 12–00 | तक | **सर्वदर्शन व तीर्मानम्** |
| शाम को | 5–00 | से | 6–00 | तक | **सर्वदर्शनम्** |
| | 6–00 | से | 7–00 | तक | रात का कैंकर्य, तोमाल सेवा, रात्रि की घटी आदि |
| | 7–00 | से | 8–45 | तक | सर्वदर्शन |
| | 8–45 | से | 9–00 | तक | एकातसेवा |

सूचना — शनिवार, पुनर्वसु नक्षत्र के दिन या अन्य विशेष उत्सवो के समय में उपरोक्त कार्यक्रमो में परिवर्तन होगा।

**अर्जित सेवाओ की दरे :—**

१) सहस्रनामार्चना प्रात 8–00 बजे से 9–00 बजे तक — रु 2–00 हर एक व्यक्ति को
२) अष्टोत्तरम् (सर्वदर्शन के समय पर) — रु, 1–00
३) हारती ( „ „ ) — रु. 0–50
४) साप्ताहिक अभिषेकानतर दर्शन (सिर्फ शनिवार को) — रु. 1–00

और माध्व वैष्णव दास्य भक्ति के प्रशसक है। वल्लभ सप्रदाय में सख्य भक्ति की अधिक मान्यता है। भागवत और तमिल प्रबन्धो में दास्य, सख्य तथा वात्सल्य भक्ति के उत्कृष्ट विवरण मिलते हैं।

कर्णाटक के हरिदासो तथा सूरदास आदि हिन्दी भक्तो की साहित्य - कृतियो में वात्सल्य भक्ति के उत्कृष्ट वर्णन उपलब्ध है। उनकी कृतियों ने वात्सल्य भक्ति को अविस्मरणीय बनाया है। जब कभी बच्चे नाचते - कूदते है, नटखटी करते है या शोर मचाते है, तब उनके माता - पिता श्रीकृष्ण की बाल - क्रीडाओ की याद करने लगते है। उनको श्रीकृष्ण की दिव्य लीलाओ को मन में दर्शन करने का भाग्य उपलब्ध हो जाता है; दिव्यलीलाओ के आध्यात्मिक रहस्य विस्फुरित होने लगते है। अपनी कौटुम्बिक परिस्थितियो के बावजूद उन्हें आध्यात्मिक शान्ति सुलभ बन जाती है। कर्णाटक के लोगो को हरिदासो से रचित भक्तिगीत वरदान - सदृश है। दधिमन्थन करते समय, धान कूटते समय, दूध दुहते समय, बच्चों को सुलाते समय या कोई भी काम - काज करते समय उनमे सम्बन्धित श्रीकृष्ण की बाललीलाओ के पद उन्हे आध्यात्मिक सन्तुष्टि प्रदान करते है।

मातापिताओ को बच्चे ही सर्वाधिक है। नटखटी करनेवाले बच्चो को माता - पिता मारते पीटते हैं केवल उन्हें सन्मार्ग में लाने की दृष्टि से। उसी प्रकार, जो लोग भगवान को सपूर्ण जगत् के मातापिता मानेंगे और उनकी सेवा में यथा - साध्य अपने आप को समर्पण करेंगे उन्हे अवश्य भगवदनुग्रह प्राप्त होगा। यही वैष्णवो की वात्सल्य भक्ति साधना का मन्तव्य है। साकारोपासना में ही नवधाभक्ति साधनाएं साध्य है।

नौ प्रकार की भक्तिसाधनाएँ है। श्रवण, स्मरण, कीर्तन, पादसेवन, वन्दन, अर्चन, सख्य, दास्य, आत्मनिवेदन अथवा माधुर्य–भक्ति नवधा–भक्ति साधनाएँ कहलाती है। दैवदत्त समस्त इन्द्रियो को भगवान की सेवा में नियोजित करके मानव ऐहिक एवं पारलौकिक सुख प्राप्त कर सकता है। सूरदास जी का कथन है कि अम्बरीष महाराजा इन सभी साधनाओ के महान साधक थे। यथा

"अम्बरीष राजा हरिभक्त रहे सदा हरिपद अनुकूल।
श्रवण, कीर्तन, सुमिरनकरै, पादसेवन अर्चन उर धरै।
वन्दन दासपनौ सो करै भक्तिन सख्यभाव अनुसरै।
कायनिवेदन मदाविचरै, प्रेम सहित नवधा विस्तरै।'

प्रसन्न वेंकटदास जी ने निम्न रीति से नवधा - भक्ति - साधनाओ का महत्त्व गाया है।

"हरिय ओंब्बत्तु भकुति बल्ल धीरा मरळि
ससृतियल्लि हुट्टिबारा ॥
दुरित दुष्कृतिगळ कण्डुरोर, हिरियरोळ् बिरुनुडि
जिह्वेगे तारा ॥
प्रसन्न वेंकट गिरिय उदारन चरणाब्जनिधि
अगिडि इट्टु तोरा ॥"

("जो नवधा - भक्ति का ज्ञाता है, वह ससार - चक्र में फिर जन्म नहीं लेगा, दुष्कृत्य नहीं करेगा और गुरुजनो के बारे में जीभ पर बुरी बातें नही लाएगा। वह उदार वेंकटाचलपति के चरणो में सदा मग्न रहेगा। वह दिखावटी बाजार नहीं खोलेगा")

विषयसुख ही जन - साधारण केलिये पचप्राण है। मानव को विषय - सुखों में आसक्त कराने चचल मन दसो इन्द्रियो द्वारा दौडते कूदते प्रयत्न करता रहता है। अधिकांश लोग यह नहीं जानते कि दैवदत्त सभी अवयव आध्यात्मिक प्रगति केलिये भी सहायक है। कानो से अच्छी तथा बुरी दोनो प्रकार की बातें सुन सकते है। अन्त.करण से अच्छे और बुरे भावो को स्मरण कर सकते है। जीभ से हितकर एवं अहितकर वार्त्तालाप कर सकते है। हाथ - पैरो से उपकार और अपकार दोनो साध्य है। स्पर्शेन्द्रियो से शीतोष्णा आदि का ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञानेन्द्रियो से सुख और दु ख का अनुभव पाकर मन सन्तुष्ट या दुखी होता रहता है। किन्तु मानव दुख से डरता है और दूर भागने का प्रयत्न करता है। वह विषय सुखो में जितना उलझाता है उसे कष्ट - कार्पण्य उतने ही सताते है। लौकिक सुख क्षणिक है और उनके परिणाम दुःख है।

इसीलिए ऋषिमुनियो ने नवधा भक्ति - साधनाओ का प्रसार करके जन - साधारण को सासारिक दु खो से छुडाने, इन्द्रियो को पवित्र बनाने तथा जीवात्मा को परमात्मा के दर्शन कराने के महान् कार्य किये है।

"नारद - भक्ति - सूत्र" में नवधा - भक्ति का पूर्ण विवेचन है। नवधा - भक्ति में "विविधता में एकता" का तत्त्व निगूढ है जो भारतीय सस्कृति का विशिष्ट आधारशिला है। इस से दसो इन्द्रियो में तेज् दौडते हुए चचल मन को नियन्त्रित करके भगवद्दर्शन पाने का सदवकाश मिलता है। हिन्दी और कन्नड् की वैष्णव साहित्यिक कृतियो मे इन साधनाओं का पूर्ण विवरण है। पन्द्रहवीं शती से सत्रहवीं शती तक तो नवधा - भक्ति - युग ही है।

अब एक एक करके इन साधनाओ की विशेषताओ को पहचानें। भगवान के नामोच्चारण, गुणगान्, लीला माहात्म्य आदि को सुनने से हृदय परिशुद्ध होता है। वैसे ही शुद्ध हृदय से भगवद्दर्शन करना साध्य है। श्रवण, स्मरण और कीर्तन परस्पर सबद्ध है। वेद पारायण, रामायण, महाभारत, भागवत, विष्णु सहस्र नाम और पौराणिक पुण्य कथाओ के श्रवण स्मरण और कीर्तन से अनक्षरस्थ और लौकिक भी धर्म के सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचारो का भी ज्ञानी बन जाता है। उसकी बुद्धि अतिगहन विचारो का भी झट समझने समर्थ बन जाती है। श्रवण भक्ति आठो सिद्धियो और नवो निधियो को प्रदान करने की शक्ति रखती है। भारत के सभी देवालयो में श्रवण-स्मरण-कीर्तन और भजन के कार्यक्रम जारी रखने प्राचीन काल से समाज - हितैषी धनी लोग प्रबन्ध करते थे। देवालयो में साधारण से साधारण लोग भी इनके पूर्णलाभ पाने विशाल सभामण्डपो में एकत्रित होते थे। वहाँ प्रतिदिन एकत्रित होकर आम लोग सांस्कृतिक धार्मिक एवं आध्यात्मिक विचारो के साथ साथ दैनंदिन कार्यों में और सामाजिक व्यवहारो में दक्ष बनने की शिक्षा पाते थे। वे इसके फल स्वरूप शान्ति, सुख और सहजीवन के पाठ सीखकर देश भर सुख-शान्ति का प्रसार करते थ। आशा है कि यह कार्यक्रम भविष्य में भी जारी रहेगा। सब को यह ज्ञात है कि शिशु और पशु भी सगीत सुनकर हर्षित हो जाते है। बच्चे गाने में दिलचस्पी लेते है क्यो कि वे प्राय: संगीत - प्रिय है। बालिगो केलिये भी सकीर्तन से बहुत से लाभ है। सकीर्तन उनके विषय - विकारो को नष्ट करके पारलौकिक सुख पहुँचाता है। त्यौहारो के दिन बहुत से लोग मन्दिरो में भगवद्दर्शन करने जाते है। कम से कम त्यौहारों के दिन सभी भगवन्मन्दिरों में भजन तथा श्रवण, स्मरण और कीर्तन केलिये गुंजाइश करना अत्यावश्यक है।★

# सूरदास - एक झांकी

कु. ए मरोजिनी, तिरुपति

हिन्द साहित्याकाश में उज्वल तारो के समान भासित होनेवाले भक्तकवियो में महात्मा सूरदास जी श्रेष्ट माने जाते है। इनके विषय में यह उक्ति प्रसिद्ध है—"सूर सूर तुलसी शशि, उड्गन केशवदास।' इसका अर्थ है — हिन्दी साहित्यरूपी आकाश में सूरदासजी सूर्य तुलसीदास जी चन्द्रमा और केशवदास जी उड्गण (नक्षत्र) के समान है। सूरदास जी कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि और 'अष्टछाप' के कवियो में अग्रगण्य माने जाते है।

महात्मा सूरदास जी के जन्म-मरण सबधी सवत्, तिथि जन्मस्थान आदि अनिश्चित हैं। इसलिए कुछ साहित्यालोचक उनके आविर्भाव संवत् १४८३ में और तिरोधान सवत् १५६३ में मानते है। कुछआलाचक इन्हे सारस्वत ब्राह्मण मानते है, तो और कुछ चन्दबरदाई का वशज ब्रह्मभट्ट। यह विषय भी सदेहास्पद है कि सूर जन्मान्ध थे या नहीं? । किन्तु सूर की कविता को पढने के बाद हमें यह सदेह होता है—क्या जन्मान्ध व्यक्ति इतनी सरसता के साथ कविता लिख सकता है? क्योकि उन्होने रंगो, बाल-क्रीडाओ आदि का ऐसा सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है, जो एक जन्मान्ध द्वारा असभव प्रतीत होता है।

सूरदास जी के गुरु श्रीवल्लभाचार्य जी है। कहा जाता है वल्लभाचार्य जी के शिष्यत्व ग्रहण करने के पूर्व सूरदास जी 'गऊँघाट' पर रहकर भगवान को मालिक और अपने को दास समझ कर विनय के पद गाया करते थे। उसी समय वल्लभाचार्य जी से इनकी भेंट हुई। वल्लभाचार्य ने सूर को श्रीनाथद्वार के प्रधान गायक बनाया। बाद मे सूरदास जी वल्लभाचार्य से प्रेरित होकर "सूर सागर" की रचना करने लगे। इसमें उन्होने भगवान को अपने सखा मानकर पद गाये थे। आप की दास्य-भक्ति सख्य-भक्ति के रूप में परिवर्तित होने का कारण मैंने ऊपर बताया है। अब दास्य-भक्ति और सख्य भक्ति से भरा प्रेम, दोनो के उदाहरण देखें—

"चरण-कमल बंदौ हरि राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लघै, अधे को सब कुछ दरसाई॥
बहिरौ सुनै गूँग पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई।
'सूरदास" स्वमी करुणामय बार-बार बन्दौ तेहि पाई॥"

भगवान सर्वशक्तिमान और घटनाघटन समर्थ है। क्योकि भगवान की कृपा से ही मूक बोलना है, बहरा सुन सकता है, लगडा पर्वत पार कर सकता है। उसी प्रकार रक चक्रवर्ती हो भी सकता है। इस पद में भगवान के प्रति सूरदास जी ने दास्य भावना को दिखाया है।

अब यह देखिये प्रेम से भरे सख्य-भक्ति का उदाहरण—

"आए जोग सिखावन पाँडे।
परमारथी पुराननि लादे, ज्यौं बनजारे टाँडे।
हमारे गति-पति कमल-नयन की जोग सिखै ते राँड॥
कहौ मधुप कैसे समाहिंगे, एक म्यान दो खाँडे।
कह षट्पद कैसे खैयतु है, हाथिनि कै सँगे गाँडे॥
काकी भूख गई बयारि भखि, बिना दूध घृत माँडे।
काहे कौं झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँडे॥
सूरदास तीनौ नहि उपजत, धनिया धान कुम्हाडे॥"

गोपियो के हृदय मे कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति है। वे उसके अलावा और किसी से प्रेम करना नहीं चाहती है। इसी का वर्णन इस पद में किया गया है।

गुरु हमें भगवान के पास पहुँचानेवाला है। इसलिए सूरदास जी भगवान पर जिस प्रकार अनन्य भाव दिखाते है, उसी प्रकार की भावना को गुरु के ऊपर। उनकी दृष्टि में ईश्वर और गुरु में अतर नहीं है। गुरु ही साक्षात् ईश्वर है। सूरदास के निम्न लिखित पदाश से गुरु भक्ति की महिमा स्पष्ट होती है।

"हरि हरि, हरि-हरि सुमिरन करो।
हरि चरनारविंद उर धरो।
हरि गुरु एक रूप जान।
तामें कछु सदेह न आन।
गुरु प्रसन्न हरि प्रसन्न होई।
गुरु के दुखित दुखित हरि होय॥"

इस पद मे हमें मालूम होता है कि सूरदास जी की गुरु-भक्ति कितना महान् है?

सूरदास जी के प्रमुख ग्रन्थ और पहली रचना है—"सूर सागर"। इसमें भागवत के दशम स्कध में वर्णित कृष्ण-लीलाओ का सुमधुर और विस्तृत वर्णन है। यद्यपि प्राय. कवि की पहली रचना उतना सुन्दर नहीं होती। लेकिन "सूर सागर" को देखने के बाद हमें यह सन्देह होता

भक्तकवि सूरदास

है कि कवि की यह पहली रचना इतना सुन्दर कैसे हुई? किन्तु यह बात तो सत्य ही है कि "सूर सागर" कवि की पहली रचना होते हुए भी सरस और मार्मिक है।

"सूर सागर" में श्रीकृष्ण के आस पास की सारी सृष्टि भी उन्हें अपने सखा मानकर उनकी प्रत्येक लीला में भाग लेती है। सूरदास जी ने राधा-कृष्ण के प्रेम-प्रसंगो का जो वर्णन किया है, उनमें मानव-हृदय के सूक्ष्म उद्गार है, और मानव के बाल्यकाल से लेकर वृद्धावस्था तक के सब प्रकार का वर्णन पाया जाता है। उन्हे पढने से मनुष्य का हृदय सुख-दुःख के भावो के साथ आनंद से स्पदित होता रहता है। पाठक श्रीकृष्ण के हंसने के साथ हंसता है, उनके रोने के साथ रोता है और उनकी श्रृगारिक चेष्टाओ में रागात्मकता का अनुभव करना है।

"सूर सागर" में हमें दो प्रधान घटनाएं मिल पाती हे एक कृष्ण की "बाल-लीला" और दूसरी तो "भ्रमरगीत"। सूरदास जी ने कृष्ण की बाल्य लीलाओ का ऐसा चित्र खींचा कि पढते ही मन आनद विभोर होता है। 'कृष्ण की बाललीलाओ" का प्रधान रस वात्सल्य और "भ्रमरगीत" का प्रधान रस श्रृगार है। अब देखिए कृष्ण की बाल लीला का यह उदाहरण कितना सुन्दर है—

"मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो।
मोसों कहत मोल को लीनो, तू जसुमति कब जायो।
कहा कहौ यहि रिस के मारे, खेलन हौं नहि जातु।
पुनि पुनि कहत कौन है माता को है तुम्हारे तातु।
गोरे नंद जसोदा गोरी, तुम कत श्याम सरीर।
चुटकी दै-दै हँसत बाल सब, सिखै देत बलवीर।
तू मोहि को मारन सीखी, दाउहि कबड न खीझै।
मोहन को मुख रिस समेत लखि, जसुमति सुनि सुनि रीझै।
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत।
"सूरस्याम" मो गोधन की सौं हौं माता तू पूत॥"

बालक का सहज स्वभाव है कि माँ के पास आकर दूसरो के ऊपर शिकायत करना। माँ को उसे समझाने आसमान को जमीन पर लाना पडता है। बालक के इसी मनोभाव का चित्रण इस पद में अत्यंत सरसता के साथ किया गया है। कृष्ण खेलने केलिए ग्वाल बालको के साथ जाता है, वहाँ बलभद्र झगडा खडा करके कृष्ण की हँसी उडाता है। उसी की शिकायत कृष्ण ने यशोदा माँ से की है। तब यशोदा को उसे समझाना पडता है। इसी का वर्णन इस पद में हमें मिलता है। इस तरह के वात्सल्य से भरे पद 'सूर सागर' में अनेक मिलते है। सूरदास जी ने "सूर सागर" को महाकाव्य के रूप में न रचकर मुक्तक के रूप में ही रचा है। सूरदास जी केवल कवि, भक्त ही नहीं, अपितु गायक भी थे। इसलिए उन्होने अपने सब पदो को गाने योग्य ही राग ताल युक्त बनाया।

"सूर सागर" के और एक प्रधान भाग है— "भ्रमरगीत"। "भ्रमर गीत" के प्रतिपाद्य विषय है—"निर्गुण ब्रह्मवाद का खंडन और सगुण ब्रह्मवाद का मंडन"। कृष्ण कंस-वध के निमित्त मथुरा जाकर वहीं रह गये। गोपियों को वह बिलकुल भूल से गया। गोपियाँ इस वेदना से व्याकुल हो गयीं। बार-बार मथुरा को समाचार भेजने लगीं। कृष्ण उनके प्रेम पर मुग्ध था, पर राजकाज के कारण वह व्रज लौट नहीं आ सका। कृष्ण का एक दोस्त उद्धव सगुण भक्ति को तुच्छ समझने वाला था। उसे रास्ते पर लाने केलिए कृष्ण ने गोपियो के पास भेजा। उद्धव गोपियो को तुच्छ वासनाएं छोडकर निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने का उपदेश देता है। तब गोपियाँ खीझकर उद्धव और कृष्ण को जो दोनो काले हे, कुटिल भौंरे के समान मानकर व्यग्य करती है। ये ही पद "भ्रमर गीत" के नाम से प्रसिद्ध है। सूरदास जी ने गोपियो द्वारा उद्धव के निर्गुण ज्ञान की हँसी उडायी है। निम्न लिखित पद से यह स्पष्ट होता है—

"ऊधो, मन मानी की बात।
दाख छोहरा छाँडि अमृतफल विषकीरा विष खात।
जो चकोर देइ कपूर कोइ, तजि अगार अघात।
मधुप करत कौरे काठ में, बँधत कमल के पात।
ज्यों पतग हित जानि आपनो, दीपक सों लपटात।
"सूरदास" जाको मन जासों सोइ ताहि सुहात॥"

जब उद्धव निर्गुण ब्रह्म की विशेषता बताता है, तब गोपियाँ क्रुद्ध होकर सगुण ब्रह्म की व्यापकता के बारे में अनेक उदाहरण देते है। अत में गोपिया कहती है कि पतंग अपनी भलाई समझकर दीप से जाकर लिपट जाता है। उसी प्रकार है तुम्हारा यह उपदेश। इसलिए तुम्हारा यह उपदेश निरर्थक है। जिसे तुम्हारा उपदेश अच्छा लगता है, उसे ही तुम अपना उपदेश सुनाओ।

सूरदास जी के काव्य में कलापक्ष की उपेक्षा नहीं की गयी, फिर भी हृदयपक्ष की ही प्रधानता है। अत सूरदास जो श्रेष्ट कवि माने जाते है और उनका काव्य श्रेष्ट काव्य।

जिस प्रकार हम छोटे बच्चे का लालन-पालन कर उसे प्यार करते है, उसी प्रकार भगवान को बच्चे के समान मानकर उनसे नाता रखना चाहिए यही सूरदास की वात्सल्य भक्ति का रहस्य और सदेश है। पति के वियोग से पत्नी जितना दुखी होती है, उसी प्रकार आत्मा परमात्मा से अलग होकर दुखी होती है। उसी प्रकार का वर्णन भ्रमर गीत में मिलता है। भगवान के सगुण रूप की उपासना जितनी आसानी होती है, उतनी निर्गुणोपासना नहीं होती। इन्हीं बातों का प्रतिपादन करना ही सूरदास के काव्य का उद्देश्य था।

ऐसे महान कवि देश और काल से परे होते है। अतः कहा जाता है—

"जयंति ते सकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति एषां यशः काये जरा मरणजभयम्॥"

# लक्ष्मी पूजा का पर्व - दीपावली

डॉ. शोभनाथ पाठक एम ए
मेघनगर (म. प्र.)

दीपावली की दिव्यता में कितना निखार आ जाता है कि जब - दीपक की लौ से लक्ष्मी की आरती होती है। जिसमें समायी सुख समृद्धि की कामना मानव को निहाल कर कमलासना के कमलवत चरणो पर छहल पडने को अधीर हो जाती है। भावनाओ का आवेग थामे नहीं थमता, बल्कि अगणित ज्योति के रुप में उफन पडता है। समष्टि रुप से यही कहा जाना उचित होगा कि दीपावली लक्ष्मीपूजन का पावन पर्व है, जिसमें सम्पन्नता के सपने संजोये समाज का प्रत्येक प्राणी अपनी पावन पूद्ध को लक्ष्मी के प्रति उडेल आशा के दीप चढा आलोक से अन्धकार को चीरने का आहवान करता है।

विश्व वैभव की स्त्रोत लक्ष्मी का लोक व्यापी स्वरुप चिरकाल से ही समाज द्वारा पूज्य रहा है। सर्व महत्ता को आकना आसान नहीं है। आदि काल से लक्ष्मी की लोक व्यापकता अक्षुण्ण रही है। विष्णु पत्नी लक्ष्मी देवी की वरीयता को विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में पराखिये यथा।

सक्तुमिव तितउना पुनतु, यत्र धीरा मनसा
वाचमक्रत।
अत्रा सखाय: सख्यानि जानते, भद्रैषा
"लक्ष्मी" निहिताधि वाचि ॥
(ऋग्वेद १०/७९/२)

लक्ष्मी की कृपा के लिए लोग लालायित रहते है। जन-जन की आकर्षक देवी लक्ष्मी को ऋग्वेद में श्री पुरन्धी आदि नामो से सम्बोधित किया गया है। यहाँ केवल लक्ष्मी की वरीयता को उजागर किया जारहा है। अत· ऐश्वर्य व सम्पदा की देवी लक्ष्मी का यही रुप अथर्व वेद में भी परखिये यथा:

ऋत सत्य तपो श्रद्धा, श्रमो धर्मश्च कर्म च
भूत भविष्य दर्थे च वीर्य लक्ष्मी वर्क्त......।
अथर्ववेद (९९/७/)

अर्थात ऋत, सत्य, बल, वीर्य, पूजा, सौभाग्य आदि से समन्वित देवी लक्ष्मी की कृपा से सब प्राप्त किया जा सकता है। श्री सम्पदा की कामना प्रत्येक प्राणी करता है। "श्री" और 'लक्ष्मी" सम्पदा सूचक शब्द हैं इसका विवेचन यजुर्वेद ३९/२२ में किया गया है। लक्ष्मी विष्णु की प्रिया है। जो समुद्र मथन मे उन्हें प्राप्त हुई थी। १५ रत्नो में लक्ष्मी समृद्धि की देवी यथा :–

ह्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ। अहोरात्र पार्श्वे
नक्षत्राणि रूपं।
अश्विनौ व्यात्तम इष्ठमनिषाणां, अमम् मनिषाणां, सर्वं मनिषाणां

भारतीय सस्कृति की सवारने वाले वैदिक ग्रंथो में लक्ष्मी विविध रुपो में प्रकट हुई है। मार्कण्डेय पुराण में उन्हे

"इन्दिरा कमला लक्ष्मी· सा श्री रुक्माम्बुजासना"

जब कि वाजसनेयी संहिता में लक्ष्मी को आदित्य से सम्बद्ध किया गया है। विष्णु पुराण में समुद्र मन्थन का वृतान्त है, और उसी से लक्ष्मी की उत्पत्ति बताई गयी है सभवत: इसलिए मत्स्यपुराण में स्पष्ट निर्देश है। जहाँ कहाँ भी विष्णु की प्रतिमा प्रतिष्ठित की जाय वहाँ लक्ष्मी की भी होनी चाहिए। विष्णु स्मृति में तो लक्ष्मी स्वय कहती है कि वे सदैव ही विष्णु के पास रहना चाहती है। विष्णु पुराण में लक्ष्मी की स्तुति ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए की जाती है। जब कि मत्स्य पुराण में द्वादशी व्रत के वर्णन द्वारा विष्णु लक्ष्मी की पूजा को प्रधानता दी गयी है। सम्पति व ऐश्वेय प्राप्ति के लिए पद्मपुराण के उत्तराखण्ड और स्कन्द पुराण के कार्तिकमास महात्म्य में लक्ष्मी पूजाका-विशद वर्णन है।

लक्ष्मीपूजा विषयक तथ्यो पर भी गम्भीरता से विचार करना चाहिए। वैसे लोग रात्रि में पूजा करते है जब कि कमलासना लक्ष्मी का कमल रात्रि को बन्द हो जाता है। अत· पूजा का समय तो "प्रदोष समये लक्ष्मी पूजयित्वा यथा क्रमम केवल पूजा से ही यदि लक्ष्मी प्राप्त हो जाँय तो सभी लोग घटे दो घटे पूजा करके धनवान बन जाय किन्तु वास्तविक धनवान बनने के लिए मनुष्य को चरित्र स्वभाव शुभ शक्ति आदि गुणो से निखरा चाहिए क्योकि लक्ष्मी स्वय उसे पसद करती है जिसे उनके मुख से सुनिये।

वसामि नित्यं सुभगे प्रवर्तने. दक्षे नरे कर्मणि
वर्तमाने।
अक्रोधके देवगुरौ कृतज्ञे, जितेंद्रिये नित्य
मुदीर्णसत्वे।

---

## सूचना

हमे पता चला कि कुछ लोग श्री भगवान बालाजी के नाम पर असभव घटनाओं को तथा झूठी कहानियों को छपवाकर भक्तजनों को बांटकर धोखे दे रहे हैं। अत: आप लोगों से हमारी प्रार्थना है कि कृपया ऐसी बातो पर विश्वास मत कीजिए।

ति. ति. देवस्थान,
तिरुपति.

### ति. ति. देवस्थान के

# श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मन्दिर

### तथा

# श्री चन्द्रमौलीश्वर स्वामी का मन्दिर

आन्ध्र आश्रम, हृषीकेश (उ. प्र.)

| | | श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मन्दिर | श्री चन्द्रमौलीश्वर स्वामी का मन्दिर |
|---|---|---|---|
| | | रु. पै. | रु. पै. |
| अर्चना | एक टिकेट | २—०० | १—०० |
| हारती | ,, | ०—५० | ०—५० |
| सहस्र नामार्चना | ,, | ५—०० | ५—०० |
| तोमल सेवानंतर दर्शन | ,, | ५—०० | |
| नारियल चढाना | ,, | ०—२५ | ०—२५ |

| | | श्री राज्यलक्ष्मी देवी का मन्दिर | श्री पार्वती देवी का मन्दिर |
|---|---|---|---|
| अर्चना | ,, | १—०० | १—०० |
| हारति | ,, | ०—५० | ०—५० |
| नारियल चढाना | ,, | ०—२५ | ०—२५ |

### अन्नप्रसाद

| | | रु पै. |
|---|---|---|
| दही भात | एक तलिग | ४५—०० |
| बघार बात | ,, | ४५—०० |
| पोंगलि | ,, | ६०—०० |
| शक्कर पोंगलि | ,, | ६५—०० |

सूचना :— हर एक अन्न प्रसाद की अर्जित दरों के साथ साथ सिंग-मोरै खर्च केलिए रु. ३/– चुकाना पडेगा। अन्न प्रसादों की आधा दर चुकाकर आधा तलिग अन्न प्रसाद अर्जित सेवा को भी मना सकते हैं।

स्वधर्म शीलेषु च धर्म वित्सु, वृद्धोपसेवा
निरते च दान्ते।
कृतात्मनि क्षान्ति प्रिये समर्थे, क्षान्तासु
दान्तासु तथाबलासु।
वसामि नारीषु पतिव्रतासु कल्याण शीलासु
विभूषितासु॥

कहने का तात्पर्य कि सद्गुणो का समवाय ही लक्ष्मी का वासस्थल है अतः समृद्धिकी आकाक्षा रखने वाले को सचरित्रता के साथ साथ श्रम शक्ति भी होना चाहिए क्यो कि,

'उद्योगिन पुरुषसिंह मुपैति लक्ष्मी'

श्रम सीकर से सिक्त समृद्धि स्थायी होती है तभी तो दीपावली की पावनता में श्रम से जहां स्वच्छता का वातावरण सर्वत्र व्याप्त हो जाता है, उसी प्रकार सचरित्रता का भी आहवान किया गया है। यथा–

सत्याधार स्तपस्तेज, दयावर्ति क्षमा शिखा।
अन्धकारे प्रवेष्टव्ये दीपोयत्नेन वर्धताम्॥

सत्य, शक्ति, क्षम, दम, व्रत आदि से ही तो भारतीय सस्कृति की नींव है। जिसपर सर्वे भवन्तु सुखितः का भव्य प्रासाद प्रतिष्ठित है इसलिए तो—

भूमि कीर्तिदिशो लक्ष्मी, पुरुषं प्रार्थयन्ति
ही।
सत्य तमनुवर्तन्ते, सत्य समनुवर्तते॥

दीपावली के आलोक में दीपक लेकर आहवान भी यही है कि हम सत्यपथ पर सचरित्रता के सबक से श्रमोपार्जित सुख प्राप्त करें। दीपावली के प्रात. ओसूप बजाकर औरतें समृद्धि (लक्ष्मी) को बुलाती व दारिद्रय को भगाती है उसका तात्पर्य भी यही है

प्रात: काल उठकर अपने दैनिक कार्य को निखारिये। ब्रह्ममुहूर्त का उठना सुख समृद्धि प्रदात है। जबकि —

सूर्योदये चास्तमियेपि शयानम्।
विमुज्जति श्री रापे चक्रपाणिन॥

अर्थात सूर्योदय के बाद उठने वाले को लक्ष्मी छोड देती है। भले ही वह विष्णु के समान क्यो न वैभववान हो। अत अपने बहुमुखी विकास तथा स्थायी समृद्धि के लिए चारित्रिक निवारन के साथ श्रम शक्ति बजकर दीपावली की दिव्यता में समायी समष्ठिगत बिभूतियो के आदर्शो को अंतसमें उतार कर स्वय व राष्ट्र व मानवता को सवाजे का सकल्प कीजिए। दीपावली का तात्पर्य ही सुख समृद्धिका स्त्रोत उडेलना है।—

अमावश्या यदा रात्रौ, दिवाभोग चतुदर्शी।
पूजनीया तदालक्ष्मी, जिंया च सुखरात्रिका:॥

## राष्ट्रपति का तिरुमल आगमन

भारत के राष्ट्रपति श्री नील संजीवरेड्डी महोदय ने १. सितबर को भगवान बालाजी की पूजा करने तिरुमल आया। उन्हें तथा आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री डा० चेन्नारेड्डी जी को शेष-वस्त्र तथा पवित्रोत्सव माला भेंट किये गये। सर्व श्री पी० वी० चौदरीजी, आन्ध्रप्रदेश के देवादायशाखा मत्री, श्री एन. रमेशन्, देवस्थान की निर्वहाक मण्डलि के अध्यक्ष, श्री पी० वी० आर० के० प्रसाद जी, कार्यनिर्वहणाधिकारी तथा अन्य राष्ट्र तथा देवस्थान के उच्च अधिकारी गण ने मंदिर के पास हार्दिक स्वागत किये।

भगवान बालाजी के दर्शन के बाद श्री रेड्डीजी ने मदिर का प्रदक्षिण भी किया। रु. ८५ लाख के खर्च से देवस्थान के द्वारा निर्माण किये जानेवाले 'क्यू काम्पलेक्स' की नमूना का भी परिशीलन किया।

उन्होने तिरुमल पर एक बस टर्मिनस का भी उद्घाटन किया। जिसका रु. ३५ लाख के खर्च का अदाज लगाया गया है।

## श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के रजतोत्सव

तिरुपति मे स्थित श्री वेकटेश्वर विश्व-विद्यालय, जो देश के प्रमुख विश्वविद्यालयो में से एक है, हाल ही में अतिवैभव से रजतोत्सव मनाया था।

भारत के राष्ट्रपति श्री संजीव रेड्डी महोदय ने २, सितबर को इन रजतोत्सवो का उद्घाटन करते हुए कहा कि हर एक नागरिक को अपनी अतरात्मा की प्रेरणा के अनुसार काम करना चाहिए।

स्व टी. प्रकाशम पतुलुजी, तब के आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री को, जिन्होंने इस सस्था को स्थापित करने के लिए कई प्रयास उठाये, श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि प्रस्तुत परिस्थिति में महान व सच्चे नायको की आवश्यकता है, जो देश के कर्तव्यो को पूरी तरह से निभायें।

आन्ध्रप्रदेश के राज्यपाल तथा इस विश्व-विद्यालय के कुलपति श्री के सी. अब्रहम् जी ने भाषण दिया। आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री डा० चेन्ना रेड्डीजी ने अपने भाषण में बताया कि तीर प्रातो में एक इंजनीरिंग कालेज, जिसमे मेरैन इजनीरिंग को प्राधान्यता देते हुए खोलने की आवश्यकता है। और भी बताया कि विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता को जोडते हुए रु ५ लाख का अनुदान दिया जायगा, जिससे कडपा कर्नूल व कावलि के स्नातकोत्तर के विज्ञान विभागों में और सुविधाएँ दी जायेंगी।

डा० एम शान्तप्पाजी, उपकुलपति ने अतिथियो का स्वागत करते हुए कहा कि विविध विभागो में शीघ्रातिशीघ्र प्रगति के लिए सतर्कता से विश्वविद्यालय कोशिश कर रहा है। श्री बी वेंकटराम रेड्डी, शिक्षा मत्री ने सावनीर का उद्घाटन किया। श्री जनार्दन रेड्डीजी, आर्थि त्री ने सास्कृतिक कार्यक्रमो का तथा श्री पी बी. चौदरीजी देवादायशाखा मत्री ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किये। आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री डा० एम. चेन्ना रेड्डी जी राष्ट्रपति को एक मेमेण्टो का भेंट किया। डा० एम जे केशवमूर्तिजी रिजिस्ट्रार ने धन्यवाद समर्पण किया।

## वार्षिक दीपावली आस्थानम्

तिरुमल श्री बालाजी के मदिर में दिनाक २०-१०-७९ को वार्षिक दीपावली आस्थानम् के कारण दिनाक १९-१०-७९ को अर्जित सेवाएँ जैसे कल्याणोत्सव, वसतोत्सव, तिरुप्पावडा, सहस्रकलशाभिषेक, ऊंजल सेवा, तेप्पोत्सव, वाहन सेवायें व आमंत्रणोत्सव आदि नहीं मनाये जायेंगे।

## "श्री वेंकटेश्वर पंचरत्नमाला"

यह बात सर्वजनविदित है कि श्री बालाजी के अनन्य भक्त तथा तेलुगु साहित्य के पदकविता पितामह श्री अन्नमय्या की सुमधुर सकीर्तनाओ को प्रचार करने का भार देवस्थान ने उठा लिया। अब तो उस प्रख्यात साहित्य में से कुछ चुने हुए पद को लेकर विश्व विख्यात व कर्नाटक सगीत की प्रमुख गायिका श्रीमति एम एस. सुब्बलक्ष्मीजी के द्वारा गवाकर "श्री वेंकटेश्वर पचरत्नमाला" के नाम पर पाच लांग प्ले रिकार्डों में निकालना चाहा। इसमें से पहले लाग प्ले रिकार्ड को १, अक्तूबर याने विजय दशमी के पर्व दिन पर तिरुमल में भगवान बालाजी को समर्पित किया जायगा।

इस लाग प्ले रिकार्ड ४, अक्तूबर को नई दिल्ली में भारत के राष्ट्रपति डा० नील संजीव-रेड्डी महोदय के द्वारा और ६, अक्तूबर को हैदराबाद में आध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री डा० एम चेन्नारेड्डीजी के द्वारा तथा ८, अक्तूबर को पुटपर्ती में भगवान सत्य साईबाबा के द्वारा रिलीस् कराने का विचार है। उसके बाद बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, बेंगुलूर आदि प्रमुख शहरों में इस सदर्भ में साप्ताहिकोत्सव मनाये जायेंगे। लन्दन व अमेरिका में भी इसे रिलीस् किया जायगा। ✡

श्री वेकटेश्वर विश्वविद्यालय रजतोत्सव के अवसर पर पुष्पप्रदर्शन को देखते हुए विद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डा० जगन्नाथरेड्डीजी तथा उनको बताते हुए देवस्थान के उद्यान विभाग के अधीक्षक श्री तम्मन्ना।

# सचित्र समाचार

भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी ने तिरुमल स्थित भगवान बालाजी का दर्शन किया। उन्हीं के साथ आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री डा० चेन्ना रेड्डीजी तथा देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी और अन्य प्रमुख लोग।

★
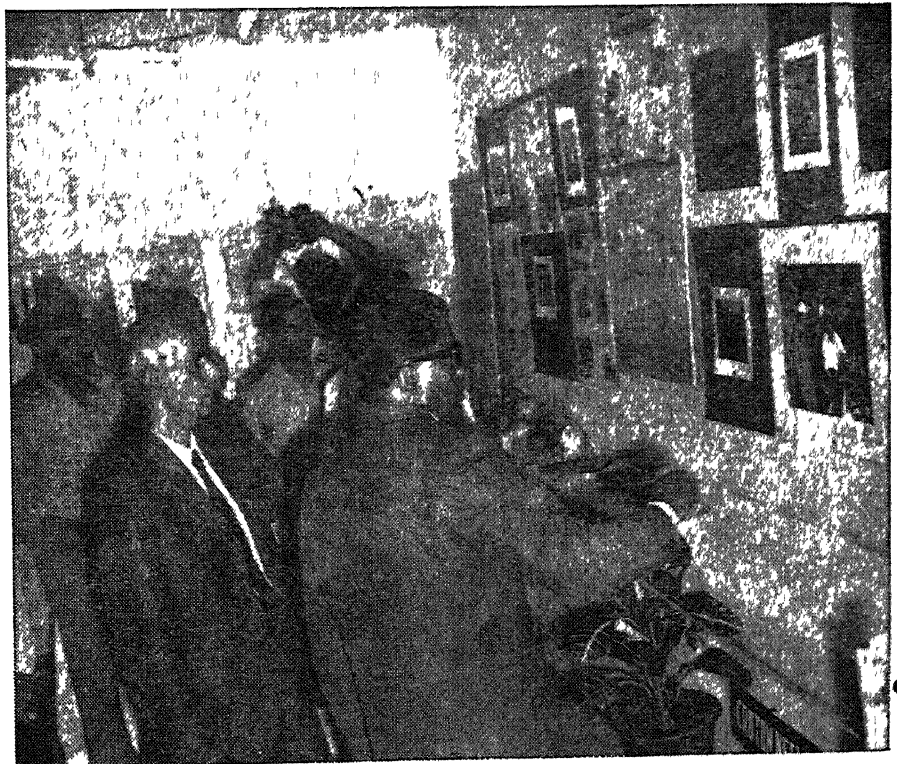
श्रीमदान्ध्र वेदशास्त्र परिषद्, काकिनाडा तथा ति ति. देवस्थान, तिरुपति के संयुक्त आध्वर्य में वेदपंडितों का सन्मान किया गया। उक्त अवसर पर सन्मानित ब्रह्मश्री उप्पलूरी गणपति शास्त्री महोदय के साथ देवस्थान के कार्य निर्वहणाधिकारी श्री पी वी आर के प्रसादजी।

हाल ही में भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मुरारजी देसाई जी को तिरुमल आगमन के अवसर पर स्वागत करते हुए देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी.वी आर के प्रसादजी।

# मासिक राशिफल

अक्तूबर १९७९

*डा० डी. अर्कसोमयाजी, तिरुपति.

## मेष

(अश्वनी, भरणी, कृत्तिका केवल पाद-१)

राहु के द्वारा आदोलन, शनि के द्वारा झगडे या धन हानि या पत्नी व पुत्रो से अलगाव, गुरु के द्वारा धन प्राप्ति, नूतन वस्त्र व नौकर या श्रृगार व प्रेम या वाहन या नये घर की प्राप्ति। कुज के द्वारा दुष्प्रभाव, बुखार व पेट मे दर्द व बुरे मित्रो के कारण चिता। रवि १७ तक अच्छाई, स्वस्थता व विजय, बाद को प्रयाण व उदर पीडा। शुक्र के द्वारा अशुभ, जिस के कारण अस्वस्थता, अपमान या स्त्री के कारण आदोलन। बुध के द्वारा २४ तक झगडे, बाद को धन प्राप्ति, नूतन वस्त्र या सतान प्राप्ति।

## वृषभ

(कृत्तिका पाद-२, ३, ४, रोहिणी, मृगशिरा पाद-१,२)

राहु के द्वारा झगडे, शनि के द्वारा धन हानि, मित्रो से झगडे या सतान से अलगाव। गुरु के द्वारा रिश्तेदारो के कारण आदोलन। कुज के द्वारा अक्रम मार्गो मे धन प्राप्ति या संतान के द्वारा धन प्राप्ति। शुक्र ६ तक अच्छाई, रिश्तेदारो का आगमन, बडो की प्रशसा या धनप्राप्ति, मित्र या सतान प्राप्ति या श्रृगार, बाद को झगडे या अस्वस्थता। रवि के द्वारा १७ तक दुष्प्रभाव अस्वस्थता या शत्रुओ के कारण आदोलन, बाद को स्वस्थता व विजय। बुध के द्वारा २४ तक अच्छाई, धन प्राप्ति व विजय, बाद को झगडे।

## मिथुन

(मृगशिरा पाद-३, ४, आर्द्रा, पुनर्वसु पाद-१,२,३)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति। शनि के द्वारा भी धन प्राप्ति, विजय व स्वस्थता व नौकर या वाहन प्राप्ति। गुरु के द्वारा निराशा। कुज के द्वारा झगड या नौकरी मे आदोलन या अस्वस्थता या घर मे चोरी। शुक्र के द्वारा अच्छाई, जिस के कारण मित्र, रिश्तेदारो का आगमन व बडो की प्रशसा। रवि के द्वारा अस्वस्थता या शत्रुओ के कारण आदोलन। बुध के द्वारा २४ तक पत्नी या पुत्र के साथ झगडे, बाद को धन प्राप्ति व विजय।

## कर्काटक

(पुनर्वसु पाद-४, पुष्य तथा आश्लेष)

राहु के द्वारा धनहानि। शनि के द्वारा भी धन हानि। गुरु के द्वारा राहु तथा शनि की बुराई को कम। कुज के द्वारा अस्वस्थता। शुक्र के द्वारा अच्छाई, जिसके द्वारा मित्र, धन या नूतन वस्त्र या विजय प्राप्ति। रवि के द्वारा १७ तक धन प्राप्ति, गौरव, बाद को अस्वस्थता। बुध के द्वारा २४ तक धन प्राप्ति, घर मे वस्तु समृद्धि, बाद को पत्नी व पुत्रो से झगडे।

## सिंह

(उत्तर फल्गुनि पाद-१, मख, पूर्व फल्गुनि)

राहु के द्वारा आदोलन। शनि के द्वारा प्रयाण व प्रयास या धनहानि या संतान से झगडे या रिश्तेदारो मे अलगाव या रिश्तेदारो को धोखा देना। गुरु के द्वारा झगडे, धनहानि, अगौरव। कुज के द्वारा धनाभाव या पत्नी को असतोष या नेत्र पीडा या अस्वस्थता। शुक्र के द्वारा धन प्राप्ति या गौरव या नूतन वस्त्र प्राप्ति या विजय व, सतान प्राप्ति। रवि के द्वारा १७ तक धन हानि नेत्र पीडा या धोखा खाना, बाद को धन प्राप्ति व विजय। बुध के द्वारा मित्र प्राप्ति, लेकिन अपने बुरे प्रवर्तन के कारण डर, बाद को विजय व गौरव।

## कन्या

(उत्तरा पाद २,३,४, हस्त चित्त पाद-१, २)

राहु के द्वारा धन हानि। शनि के द्वारा आदोलन। गुरु के द्वारा प्रयाण व प्रयास। कुज के द्वारा धनप्राप्ति व विजय। शुक्र के द्वारा श्रृगार, धन, गौरव, विजय व नूतन वस्त्र प्राप्ति। रवि के द्वारा उदरपीडा या प्रयाण या धनहानि या नेत्र पीडा। बुध के द्वारा २४ तक अगौरव, बाद को मित्र प्राप्ति, अपने बुरे प्रवर्तन के कारण डर।

## तुला

(चित्त पाद-३,४, स्वाति, विशाख पाद-१, २, ३)

राहु के द्वारा सुख। शनि के द्वारा धन प्राप्ति व श्रृगार। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति। कुज के द्वारा धनप्राप्ति। रवि के द्वारा प्रयाण, उदरपीडा या धनहानि। शुक्र के द्वारा ६ तक श्रृगार, धन प्राप्ति, गौरव या सतान प्राप्ति। बुध के द्वारा २४ तक झगडे, बुरे सलाह के कारण धन हानि, बाद को अगौरव।

**वृश्चिक**
(विशाख पाद-४, अनुराधा ज्येष्ठ )

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा धनहानि, अगौरव। गुरु के द्वारा धन हानि अगौरव। कुज के द्वारा धन हानि या अगौरव। रवि के द्वारा १७ तक स्वस्थता, गौरव, विजय, बाद को धनहानि। शुक्र के द्वारा ६ तक धन प्राप्ति, मित्र, नूतन वस्त्र प्राप्ति, २४ तक उदासीन बाद को श्रृंगार व सुख। बुध के द्वारा २४ तक शत्रु, अगौरव या अस्वस्थता, बाद को झगडे के कारण या बुरे सलाह के कारण धनहानि।

**धनुः**
(मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ पाद-१ )

राहु के द्वारा पापकार्य। शनि के द्वारा शत्रु या अस्वस्थता। गुरु के द्वारा धन, विजय या सतान प्राप्ति। कुज के द्वारा धनहानि, अगौरव, शारीरक घाव। रवि के द्वारा गौरव, धन, विजय, स्वस्थता। बुध के द्वारा २४ तक धन प्राप्ति या श्रृंगार या वाहन प्राप्ति या सतान प्राप्ति, बाद को शत्रु, अस्वस्थता, अगौरव। शुक्र के द्वारा ६ तक अगौरव, झगडे, २४ तक धन, मित्र, नूतन वस्त्र प्राप्ति, बाद को उदासीन।

**मकर**
(उत्तराषाढ पाद-२, ३, ४, श्रवण, धनिष्ठ पाद १, २ )

राहु के द्वारा आदोलन। शनि के द्वारा रिश्तेदारो से अलगाव। गुरु के द्वारा अस्वस्थता, प्रयाण व प्रयास। कुज के द्वारा पत्नी से झगडे, उदर या नेत्र पीडा। रवि के द्वारा १७ तक अस्वस्थता या धनहानि, या निराशा, बाद को विजय। बुध के द्वारा धन, विजय सुख या वाहन प्राप्ति व सतान प्राप्ति। शुक्र के द्वारा ६ तक धन, नूतनवस्त्र या श्रृंगार या पुण्यकार्य, २४ तक झगडे, अगौरव, बाद को मित्र, धन या नूतन वस्त्र प्राप्ति।

**कुंभ**
(धनिष्ठ पाद-३, ४, शतभिष, पूर्वाभाद्रा पाद-१, २, ३.)

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा प्रयाण। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति व श्रृंगार। कुज के द्वारा धन, विजय। रवि के द्वारा १७ तक अस्वस्थता या पत्नी को असतोष, बाद को धन हानि या निराशा या अस्वस्थता। बुध के द्वारा २४ तक निराशा, बाद को धन, विजय व श्रृंगार। शुक्र के द्वारा धन, श्रृंगार या नया घर या पुण्य कार्य या नूतन वस्त्र प्राप्ति।

**मीन**
(पूर्वाभाद्र पाद-४, उत्तराभाद्र, रेवती)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति। शनि के द्वारा स्वस्थता व विजय। गुरु के द्वारा मानसिक अशाति। कुज के द्वारा शत्रु या अस्वस्थता, सतान के कारण आदोलन। रवि के द्वारा १७ तक प्रयाण या उदरपीडा या पत्नी को असतोष या अस्वस्थता। शुक्र के द्वारा ६ तक स्त्री के कारण आदोलन, बाद को श्रृंगार, नूतन वस्त्र या नये घर की प्राप्ति। बुध के द्वारा २४ तक धन प्राप्ति या नूतन वस्त्र या विजय या सतान प्राप्ति, बाद को प्रयत्नो मे अवरोध।

## ति. ति. देवस्थान की निर्वाहक मण्डलि का

# प्रमुख निर्णय

**मंदिरों में वेदपारायणादारों की नियुक्ति**

वेदों के प्रचार करने के लिए मदिरों में वेदपारायणदारों की नियुक्ति करने का निर्णय लिया गया। इस प्रणाली तो अभी तक आन्ध्र प्रदेश में ही चालू रही। इसे आन्ध्र देश के बाहर अन्य राष्ट्रों के मदिरों तक फैलाने का विचार है। इस वास्ते अन्य राष्ट्रों के प्रमुख मदिरों को चुनकर, वहाँ वेदपारायणदारों की नियुक्ति करने के लिए कार्यनिर्वहणाधिकारी को सुझाव दिया गया।

## ग्राहकों से निवेदन

निम्नलिखित सख्यावाले ग्राहकों का चदा ३१-१०-७९ को खतम हो जायगा। कृपया ग्राहक महोदय अपना चंदा रकम मनीआर्डर के द्वारा जल्दी ही भेज दें।

H 21, 27, 131, 134, to 137, 139, 140, 142, 143, 161, 162, 167

निम्नलिखित पते पर चदा रकम भेजें :

संपादक,
ति. ति. देवस्थानम्,
तिरुपति.


EDITED AND PUBLISHED ON BEHALF OF THE T. T. DEVASTHANAMS BY K SUBBA RAO, M.A. AND PRINTED AT T T. D. Press, By M. Vijayakumar Reddy, Manager T. T D. Press, Tirupati
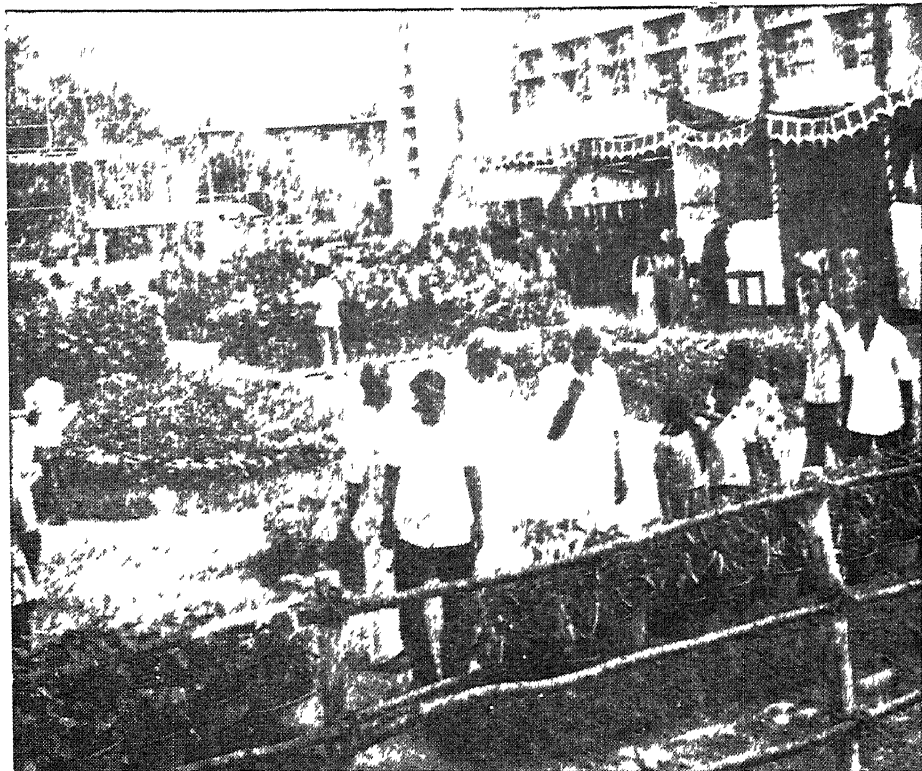
# रंग - बिरंगे फूलों का प्रदर्शन

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय रजतोत्सव के सिलसिले में देवस्थान के उद्यान विभाग द्वारा रंग - बिरंगे फूलों का प्रदर्शन किया गया है। ऊपर के चित्र में सुंदर प्रदर्शन का दृश्य तथा नीचे के चित्र में विविध क्रोटन पौधों को प्रमुख व्यक्तियों का नामकरण।
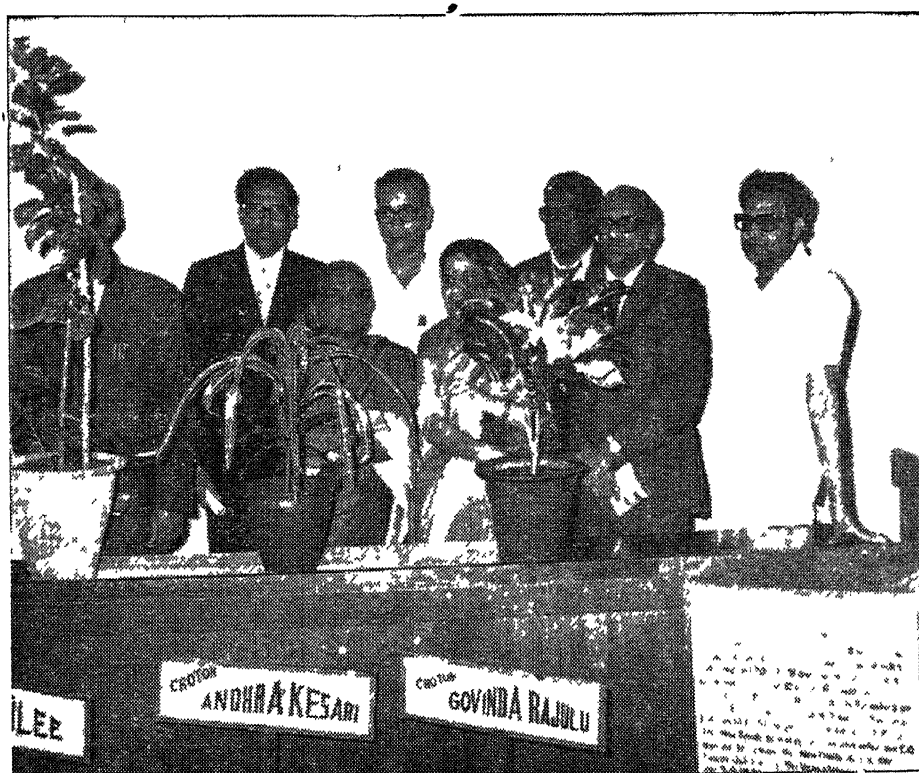
# मानव-माधव सेवाओं से युक्त कलियुग वैकुण्ठ सेवा

## श्री बालाजी के दर्शन के लिए तिरुमल आनेवाले यात्रियों को अन्न प्रसाद वितरण की योजना

* लगभग १२०० साल से ज्यादा निरंतर आगम सहित आराधना किये जानेवाले एकैक मंदिर, श्री बालाजी का मंदिर है। ब्रह्मोत्सवादि विशेष अवसर पर ५० या ६० हजारो के बीच और अन्य साधारण दिनों में २० या २५ हजारों के बीच भक्तजनों का दर्शन करनेवाला दिव्य क्षेत्र है।

* कश्मीर से कन्याकुमारी तक आराध्य देवमूर्ति श्री बालाजी हैं। हजारों भक्त, गरीब लोग अपने पास रहे पूरे धन को खर्च करके श्री वारि दर्शन के लिए पहाड को पैदल चलकर आते हैं। फिर लौट जाते समय अपने साथ श्री वारि प्रसाद को ले जाकर बन्धु मित्रों को भी बाँटने की इच्छा रखना सर्वसाधारण है।

* वैसे गरीब लोगों को यदि प्रसाद मुफ़्त में बाँट दिया जायँ तो उससे बढकर और कोई सेवा भी नहीं होती।

* इस उद्देश्य से ही देवस्थान ने मध्य वर्गीय परिवारों को भी इस धर्म कार्य में भाग लेने के अनुकूल एक योजना बनाया। उसके मुख्यांश ये है :—

* श्री वेंकटेश्वर नित्य प्रसाद धर्मादाय योजना के नाम पर चलनेवाले इस कार्यक्रम में रु. ५०० चुकाकर कोई भी भाग ले सकते हैं। इस रकम को बैंक में मूल धन के रूप में जमा कर दिया जायगा। उस पर हर साल आनेवाली सूद रु. ४५ से हर साल २० लड्डू या १५ वडै या २० भात की पोटलियाँ उनके बताये दिन पर गरीब यात्रियों को बाँट दिये जायेंगे।

* यह शाश्वत निधि होने के कारण सिर्फ एक बार जमा करें तो, निरंतर सूद आती रहती है। दाताएँ अपनी पसंद की तिथि बतायें तो उसी दिन दाता के नाम पर या उसके द्वारा बताये गये अन्यों के नाम पर इस प्रसाद का वितरण किया जायगा।

* उस निर्णीत दिन के सुबह स्वामीजी के दर्बार में उस दाता के नाम तथा गरीब यात्रियों को प्रसाद वितरण करने के बारे में निवेदन कर दिया जायगा।

* इस प्रकार रु. ५०० की पद्दति पर एक ही व्यक्ति कई दिनों का भी इंतजाम कर सकता है।

* इस प्रकार दस निधियाँ या एक ही दिन के लिए रु. ५,००० को दिये तो निर्णीत दिन पर सपरिवार उस कार्यक्रम को आ सकते हैं और भगवान बालाजी का भी दर्शन कर सकते हैं।

* इस योजना के लिए निधि स्वीकार करना तुरंत ही शुरू होती है। प्रसाद वितरण १९८० साल में आनेवाली युगादि से शुरू किया जायगा।

* श्री वारि दर्शन के लिए आनेवाले यात्रिक गणों में अति गरीब लोगों की सेवा में बिना तरतम भेद के सभी लोग शामिल होकर भगवान बालाजी के शुभासीस प्राप्त करने का अपूर्व मौका है।

* मानव सेवा तथा माधव सेवा के रहने के कारण दुगुना पुण्य कमाने की इस अपूर्व मौके को हर एक भक्त उपयोग करें तथा हमारा निवेदन है कि आप इस योजना के लिए दान भेजें।

* इस योजना को दिये जानेवाले रकम पर आयकर से भी छूट प्राप्त कर सकते हैं।

तिरुमल-तिरुपति देवस्थान, तिरुपति.